ओ३म्

परिवार और समाज के नवनिर्माण का साहित्यिक मासिक

शांतिधर्मी

फरवरी-2019

₹10

स्व॰ चौधरी मित्रसेन आर्य जी की पुण्य तिथि के उपलक्ष्य में खाण्डा खेड़ी में आयोजित प्रतिभा सम्मान समारोह में यज्ञ का दृश्य। यजमान- परममित्र संस्थान के अध्यक्ष कैप्टन रुद्रसेन जी, वित्तमंत्री कैप्टन अभिमन्यु जी, परिजन व गणमान्य व्यक्ति। यज्ञ के ब्रह्मा सहदेव शास्त्री। दूसरे चित्र में गीत प्रस्तुत करती हुई इण्डस पब्लिक स्कूल जींद की छात्राएँ।

इण्डस पब्लिक स्कूल जींद के बच्चों ने १२ वीं कक्षा का विदाई समारोह पुलवामा के शहीदों को श्रद्धांजली स्वरूप यज्ञ करके सादगी से मनाया।

जींद की आर्यसमाजों द्वारा पुलवामा के बलिदानियों की स्मृति में आचार्य अर्जुनदेव के ब्रह्मत्व में यज्ञ किया गया।

गांव जुलानी ने अपने गांव के जन्मदिवस बसंत पंचमी पर सहदेव शास्त्री के पौरोहित्य में सामूहिक हवन और भण्डारे का आयोजन किया।

बागपत में कंबल वितरण करते सर्वश्री जसपाल सिंह राणा, सतेन्द्र खोखर, आजाद धामा, जयवीर सिंह तोमर, देवेन्द्र आर्य व लोकेन्द्र तोमर।

हसनपुर मसूरी स्थित डी एस पब्लिक स्कूल में पुरस्कार वितरण करते हुए मुख्य अतिथि देवेन्द्र आर्य एडवोकेट व श्री जसपाल राणा एडवोकेट

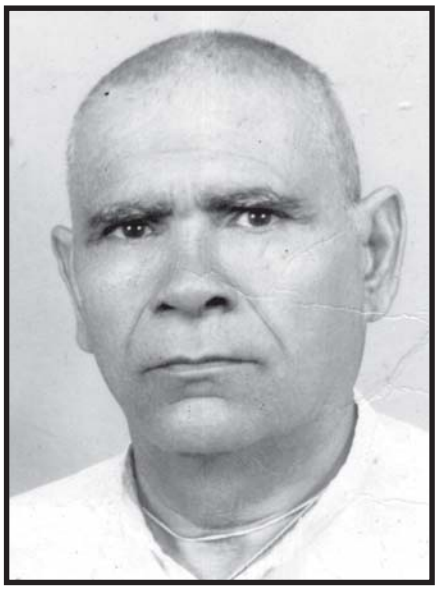

संस्थापक एवं आद्य सम्पादक

पं० चन्द्रभानु आर्य

सम्पादक : **सहदेव समर्पित**
(चलभाष **09416253826**)
उपसम्पादक : **सत्यसुधा शास्त्री**
प्रबंध संपादक : **सुभाष श्योराण**
आदरी सम्पादक : **यज्ञदत्त आर्य**
सह-सम्पादक : **राजेशार्य आट्टा**
डॉ० विवेक आर्य
विधि परामर्शक : **डॉ० नरेश सिहाग एडवोकेट**
सहयोग : **आचार्य आनन्द पुरुषार्थी**
श्रीपाल आर्य, बागपत
महेश सोनी, बीकानेर
भलेराम आर्य, सांधी
कर्मवीर आर्य, रेवाड़ी
कार्यालय व्यवस्थापकः **रविन्द्रकुमार आर्य**
कम्प्यूटर सज्जा : **बिशम्बर तिवारी**

सहयोग राशि

एक प्रति	:	१०.०० रु.
वार्षिक	:	१२०.०० रु.
दस वर्ष	:	१०००.०० रु.

ओ३म्

शं नो मित्रः शं वरुणः शं नो भवत्वर्यमा।

परिवार और समाज के नवनिर्माण का मासिक

शांतिधर्मी

फरवरी, २०१६ ई०

वर्ष : २१ अंक : १ ~~माघ~~ २०७५ विक्रमी
स ष्टि संवत्-१६६०८५३११६, दयानन्दाब्द : १६५

आलेख

सामवेद अनुशीलन (प्रभात बेला)	६
आतंकवाद का प्रत्यक्ष युद्ध (पुनर्प्रकाशन शांतिप्रवाह)	७
राष्ट्रीय चरित्र निर्माण की आवश्यकता (राष्ट्र-चिन्तन)	६
आर्य मान्यताओं के पुनः संस्थापक : दयानन्द सरस्वती	१०
स्वामी श्रद्धानन्द के जीवन का एक विस्मृत प्रसंग	१२
दायभाग और मनु का विधान (मनुस्मृति)	१५
मरुवीर गोगा बापा चौहान (वीर गाथा)	१७
सच्चा गुरु और सच्चा शिष्य	१८
संस्कृति के तीन आधारभूत स्तंभ (दर्शन)	२०
योग दर्शन के अनुसार पांच क्लेश (आत्मिक उन्नति)	२२
अंग्रेजी चिकित्सा प्रणाली असफल क्यों हुई! (स्वास्थ्य चर्चा)	२४
कविता : ५, ८, १६, २६	

स्तम्भ : युवा मंच-१६, बाल वाटिका-२६, देशभक्त बालक हेमू कालानी-२७, भजनोपदेशक/भजनावली (वैद्य मंगलदेव)-२८, बिन्दु बिन्दु विचार-३४

साथ में : ओ३म् स्मरण के शारीरिक लाभ, समाचार/सूचनायें

मुखपृष्ठ : स्वामी दयानन्द का यह भव्य चित्र आर्यपुत्री श्रीमती ऋचा आर्या (धर्मपत्नी डॉ० नीरज शास्त्री) द्वारा निर्मित है, जो श्री देवेन्द्र आर्य एडवोकेट बागपत की सुपुत्री और महाशय श्रीपाल आर्य की सुपौत्री हैं।

कार्यालय :
सम्पादक शांतिधर्मी, पो बाक्स नं० 19
मुख्य डाकघर जींद 126102
७५६/३, आदर्श नगर, सुभाष चौक, जीन्द–१२६१०२ (हरि०)
दूरभाष : ६४१६२–५३८२६
ईमेल- **shantidharmijind@gmail.com**

पूर्ण सम्पादक मण्डल अवैतनिक है। पत्रिका में व्यक्त लेखकों के विचारों से सम्पादक मण्डल का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी प्रकार के विवाद का न्याय क्षेत्र जीन्द होगा।

कर्तव्य बोध

❑सहदेव समर्पित

न्याय के पथ पर तो चलना ही कठिन है, और फिर उसको अपने जीवन का ध्येय बना लेना-- प्राणों का संकट उपस्थित हो जाने पर भी उस न्याय के पथ को न छोड़ना- कोई दयानन्द से सीखे। दुनिया का कोई प्रलोभन जिसको अपनी राह से न डिगा सके। मान अपमान के प्रसंग जिसको पल भर को अपने कर्त्तव्य मार्ग से विचलित न कर सके- ऐसा महामानव इस धरती पर सुगमता से नहीं मिलेगा! लेकिन दयानन्द उस परम्परा के प्रतिनिधि थे जिसमें न्याय की रक्षा करना और अन्याय का प्रतिकार करना प्राणों की रक्षा से अधिक मूल्यवान् माना जाता है।

निन्दन्तु नीतिनिपुणाः यदि वा स्तुवन्तु।
लक्ष्मी समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम्
अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा,
न्यायात्पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः।।

भर्तृहरि का यह श्लोक स्वामी दयानन्द को अति प्रिय था। प्रशंसा का, धन का या प्राणों का लालच धीर पुरुष को अपने कर्त्तव्य मार्ग से विचलित नहीं कर सकता। मनुष्य की सच्ची वीरता युद्धक्षेत्र में नहीं, कर्त्तव्यपालन में देखी जाती है और मनुष्य को इस वीरता को तो धारण करना ही चाहिए। धर्मात्मा लोगों का सहयोग और अन्यायकारियों का प्रतिरोध- स्वामी दयानन्द इसको मनुष्य का धर्म मानते हैं। मनुष्य उसी को कहना है कि जो मननशील होकर स्वात्मवत् अन्यों के सुख दुःख और हानि लाभ को समझे। अन्यायकारी बलवान से भी न डरे और धर्मात्मा निर्बल से भी डरता रहे। इतना ही नहीं किन्तु अपने सर्वसामर्थ्य से धर्मात्माओं- चाहे वे महा अनाथ, निर्बल और गुणरहित हों, उनकी रक्षा, उन्नति और प्रियाचरण सदा करे और अधर्मी चाहे चक्रवर्ती, सनाथ, महाबलवान और गुणवान भी हो, उसका नाश, अवनति और अप्रियाचरण सदा किया करे-- इस काम में चाहे उसको कितना ही दारुण दुःख प्राप्त हो, चाहे प्राण भी भले ही जावें, परन्तु इस मनुष्यरूप धर्म से कभी पृथक् न होवे। (स्वमंत० प्रकाश)

हरिद्वार में पाखण्ड खण्डनी पताका, काशी में सैंकड़ों कुटिल प्रतिपक्षियों के बीच अकेला ईश्वर विश्वासी संन्यासी! अपने मन्तव्य को जीवन में उतारने वाला अद्‌भुत व्यक्तित्त्व! सारे संसार के विरोधियों के बीच सिंह की तरह दहाड़ने वाला दयानन्द देश की दुर्दशा को देखकर रातों को बैठकर रोता है। धन के अभाव में एक माता द्वारा अपने मृत पुत्र को आधे वस्त्र में लपेटकर जल में बहाते देखकर अपने आँसू नहीं रोक पाता है। अपने युग के विद्वानों को निरुत्तर कर देने वाला योगी कहता है कि यदि मेरा जन्म ऋषियों के काल में होता तो मेरी गणना बालकों में ही होती।

अभी हमने बसंत पंचमी का पर्व मनाया। रंग दे बसन्ती चोला! बसन्त बलिदान का प्रतीक बन गया है। उन बसन्ती चोले वालों ने अपने कर्त्तव्य का पालन करने के लिए और अन्याय का प्रतिरोध करने के लिए अपने प्राणों का बलिदान किया। बसन्त पंचमी के दिन एक छोटे से बालक का बलिदान हुआ। उसका नाम था हकीकत राय। बालकों की छोटी सी कहा सुनी के लिए उसे विकल्प मिला अपने धर्म और जीवन में से एक को चुनने का। १०-१२ वर्ष का बच्चा! जिसे जीवन की सही समझ भी नहीं। इस बात में निश्चिंत है कि उसे प्राण देकर भी अपने धर्म की रक्षा करनी है। हकीकत अपने प्राणों को हार कर भी जीत गया। उसने एक सर्वशक्तिमान सत्ता को चुनौती दे डाली। उसको मारने वाले उसको मारकर भी हार गए। विडम्बना तो यह है कि आज की पीढ़ी उसका नाम भी नहीं जानती।

आज देश और समाज के सामने सबसे बड़ी चुनौती कोई और नहीं है, बल्कि व्यक्ति स्वयं ही है। मनुष्य की कर्त्तव्यहीनता ही उसकी सारी समस्याओं की जड़ है। वोटर और नागरिक के रूप में व्यक्तिगत लोभ के कारण ही आज का नागरिक भ्रष्टाचारी लोगों की शक्ति को बढ़ाता है। काम कोई करना नहीं चाहता, ईनाम सब पाना चाहते हैं। न नेता काम करना चाहते हैं, न अधिकारी और न कर्मचारी। चाहे लोभ में, चाहे आलस्य में और चाहे भय में, आज कर्त्तव्य हीनता का ही बोलबाला है। न घर-परिवार में कर्त्तव्य पालन हो रहा है, न समाज में। इसलिए अव्यवस्था फैल रही है। लोग अपने अपने कर्त्तव्य का पालन नहीं कर रहे हैं और एक दूसरे को दोषी ठहरा रहे हैं। प्राणों की रक्षा के लिए तो कोई न्याय के मार्ग को छोड़े तो, बात समझ में आ सकती है, पर आज अधिकांश मनुष्य अकारण अन्याय के पथ का वरण कर रहे हैं। दो दो पैसे में ईमान डोल जाता है। आलस्य के कारण यज्ञ और स्वाध्याय नहीं करते। भले आदमियों का विरोध करते हैं और दुष्टजनों की चमचागिरी करते हैं। झूठी प्रशंसा को सुनकर प्रफुल्लित हो जाते हैं और हितैषी पुरुष द्वारा दोष दिखाने पर अप्रसन्न हो जाते हैं। सत्य, न्याय और धर्म के बिना मनुष्य का जीवन अव्यस्थित हो रहा है और पक्षपातरहित न्याय के आचरण, सत्यभाषण आदि ईश्वर आज्ञा के पालन से मनुष्यता का मान होता है।

प्रकाशन का २१ वां वर्ष : सभी पाठकों सहयोगियों का हृदय से आभार!

आपकी सम्मतियाँ

पथ प्रदर्शिका शान्तिधर्मी पत्रिका वैदिक धर्म की विचारधारा के प्रचार प्रसार मे सराहनीय कार्य कर रही है। शुभकामनाएं एवं पूर्ण सहयोग।

विनीता गुलाटी
मंत्री आर्यसमाज जींद शहर-१२६१०२

✉

हर बार की तरह जनवरी अंक भी अत्युत्तम है। 'जेएनयू में राष्ट्रवाद की वीणा' विचारोत्तेजक है। बटुकेश्वर दत्त के साथ स्वतंत्र भारत में ऐसा व्यवहार हुआ, यह बहुत दु:खद और अविश्वसनीय है। मैं शांतिधर्मी पढ़कर बहुत गर्वान्वित अनुभव करता हूँ।

डॉ० मदनमोहन
आर्य कुटीर, ३०, आदिकेशवन नगर
मूलाकुलम, पांडिचेरी-605010

✉

जनवरी अंक में प्रकाशित पूज्य स्वामी विवेकानंद जी का जेएनयू प्रवचन वास्तव में अत्यंत ओजस्वी एवं स्फूर्तिदायक लगा। धन्यवाद।

भावेश मेरजा गुजरात (bcmerja@gnfc.in)

✉

जनवरी २०१९ का अंक ज्ञानवर्धक, आध्यात्मिक तथा शिक्षाप्रद है। मुखपृष्ठ पर अमर वीर सेनानी नेताजी सुभाषचंद्र बोस के सैनिकों द्वारा तिरंगे झंडे को सेल्यूट देने का दृश्य मनोहारी लगा! वैसे तो पत्रिका मैं प्रकाशित सभी रचनाएं एक से बढ़कर एक उच्च कोटि की होती हैं, लेकिन संपादकीय पत्रिका की आत्मा के तौर पर मन तृप्त कर देता है। इस बार भी संपादकीय 'जीवन की राजनीति' लाजवाब है। कुछ हद तक हमारे जीवन के ढंग पर कटाक्ष तथा प्रहार करने वाला भी है। असल में हमें जीना ही नहीं आता। हम असल जिंदगी तो जीते ही नहीं! जो होना चाहिए, हम वह हैं नहीं, और जो हैं वह नहीं होना चाहिए! कैसी विडंबना है! राजनीति कोई बुरी चीज नहीं है! यह सेवा का एक लाजवाब माध्यम है! आज के राजनेता इसे सत्ता सुख तथा स्वार्थ सिद्धि का एक हथियार समझ बैठे। २० साल पहले जब पूज्य पं० चन्द्रभानु जी का निर्णय उचित ही था। आज की राजनीति का मतलब मैं हेरफेर, बेईमानी, दोगलापन, धोखा, फरेब, झूठ कपट, सभी प्रकार का शोषण, प्रतिद्वंद्वी को खुड्डे लाइन लगाने से ही समझता हूँ। आज राजनीति धर्म, समाज, शिक्षा केंद्रों, दोस्ती तथा परिवार मैं भी घर कर गई है। सभी एक दूसरे को धोखा दे रहे हैं। पति पत्नी एक दूसरे के साथ लुका छिपी का खेल खेलते हैं। आदमी भौतिक पदार्थों का औरों के मुकाबले में अधिक से अधिक प्रयोग करके अपने आपको प्रसन्न दिखाने का नाटक करता है, लेकिन असल में वह प्रसन्न बिल्कुल नहीं है। आपने ठीक लिखा कि भक्तों को धैर्य, सहनशीलता, संयम, आत्मविश्वास, पवित्रता, सरलता से संपन्न होना चाहिए तभी उसे मन की शांति मिलेगी, दिखावे की कोई जरूरत नहीं। जो मन में है वही बाहर होना चाहिए। हम आपसे सहमत हैं कि आदमी को 'गैर राजनीतिक क्षणों' के आधार पर सुखमय जीवन जीना चाहिए!

प्रोफेसर श्यामलाल कौशल 9416359045
मकान नंबर 975 बी
ग्रीन रोड, रोहतक- 124 001 हरियाणा

सहन नहीं हो रहा साहब!

सहन नहीं हो रहा आज का माहौल साहब
न जाने उन सैनिकों के घरों में आज क्या हाल होगा!
भोजन भी किया होगा उनके घरवालों ने आज या नहीं?
बीबियों का आज उनकी खबर सुन क्या हाल होगा?
साहब बरसों लगते हैं तब होता है सैनिक तैयार एक
न जाने देश का आज कितना नुक्सान हुआ होगा!
होते शहीद हंसते-हँसते लड़ते दुश्मनों से
तो माताओं को उनकी शायद उतना मलाल न होता।
पीठ पीछे से वार कर गए जाहिल जालिम
अब तो दुश्मन दरिंदों का भी बुरा हाल होगा।
कौन जाने आखरी श्वास में आज किसे याद किया होगा!
आई होगी दुश्मनों से लोहा लेने की याद उन्हें
या घरवालों का चेहरा सामने आया होगा!
परखच्चे उड़ी उन लाशों को न जाने
उनके परिजनों ने कैसे पहचाना होगा!
कौन जानता था तीस पर भारी
हर एक सैनिक का जीवन चन्द लम्हों में तमाम होगा!
शहादत देता है सैनिक एक-एक कर यूँ ही उधर
घाटी में तो रोज उनका शहीद होना आम होगा।
कभी उड़ी, तो कभी सुन्जुवान, उधमपुर कभी होगा,
आज पुलवामा का कंठ भी इस दर्द से जाम होगा।
सैनिकों से दो हाथ करने की क्या औकात किसी की
वह तो घर के भीतर बैठे भेदियों ने ही घात लगाया होगा।
न पूछो वह कौन सी मिट्टी जिससे बनते हैं ये सैनिक
आज शहीद हुए अपने पिता को देखकर जंग में
कल बेटा फिर उसका सैनिक बन बलिदान को तैयार होगा!

स्वर्ण लतिका 'लाली'
नागरी बैंक कालोनी
राष्ट्रभाषा के पास, हिन्दी नगर, वर्धा, महाराष्ट्र-442003

अनुशीलन सामवेद : आग्नेय पर्व

प्रभात वेला

-लेखकः पं० चमूपति

अग्ने विवस्व दुषसश्चित्रꣳ राधो अमर्त्य।
आ दाशुषे जातवेदो वहा त्वमद्या देवꣳ उषर्बुधः।।६।। ४०

ऋषि -प्रस्कण्वः काण्वः- बुद्धिमान् का पुत्र बुद्धिमत्तर।

(अमर्त्य) हे मरण रहित (अग्ने) अग्नि-देव! (जातवेदः) प्राणि मात्र में विद्यमान विश्वात्मन्! (त्वम्) तुम (अद्य) आज (दाशुषे) आत्मसमर्पण करने वाले यजमान के लिए (विवस्वद्)भाति-भाति की जीवन ज्योतियों से सम्पन्न सूर्य के समान (उषसः) उषा-काल की-सी (चित्र) चित्र-विचित्र (राघः) ऋद्धि-सिद्धि (आ-वह) लाओ। तुम (उषर्बुधः) उषाकाल में प्रबुद्ध होने वाले (देवान्) देवों का (आवह) आह्वान करो।

यज्ञ की भावना अमर भावना है। जहाँ स्वार्थ आत्मा की मृत्यु की ओर ले जाता है, वहाँ परोपकार अमरता की ओर। वास्तव में जीवन नाम ही यज्ञ का है। यों तो हमारा भौतिक जीवन भी यज्ञ ही के सहारे चल रहा है। भिन्न-भिन्न अंगों के निःस्वार्थ सहयोग से ही समूचे शरीर का कार्य चलता है। यही नहीं, पौधे, पशु, मनुष्य-सभी किसी गुप्त सूत्र द्वारा, एक दूसरे से बंधे हुए हैं। संसार-भर के प्राणियों का अन्योन्याश्रय है। और तो और, कोई भौतिक शक्ति ही ऐसी नहीं जो मेरी शरीर यात्रा की वेदी पर अपनी बलि न दे रही हो। तो भी आध्यात्मिक जीवन कुछ और चीज है, वह भौतिक से कहीं ऊँचा है। शारीरिक यज्ञ को देखकर हमारे मन में आश्चर्य तथा आह्लाद पैदा होता है। हमें तर्कणा भी यही कहती है कि हमारे भौतिक स्वार्थ तक की सच्ची सिद्धि इसी में है कि हम यज्ञार्थ जीवन व्यतीत करें। परन्तु यज्ञार्थ जीवन तर्क की चीज नहीं। प्राणि-मात्र को अवयवी और अपने आपको उस अवयवी का अवयव समझने की बुद्धि किसी भी प्रकार पैदा हो जाए सही, वह मन में एक आग-सी लगा देती है, तब, मजा स्वार्थ की सिद्धि में नहीं, उलटा उसके बलिदान में आने लगता है। यज्ञिय पुरुष को भोग का आनन्द त्याग ही में अनुभव होने लगता है। मनुष्य अल्पात्मा न होकर विश्वात्मा हो जाता है। वेद ने साधना की इसी भूमिका को **'जातवेदः अग्नि'** कहा है। इस भाग के लिए मौत कहाँ है? यज्ञ-भावना सौ अमृतों का एक अमृत है।

जहाँ मनुष्य के हृदय में यह आग प्रज्वलित हुई, उसके जीवन में एक नए उषःकाल का उदय हो गया। कहाँ स्वार्थ का-संकोच का-लोक-लाज का संकीर्ण-सा जीवन? कहाँ प्राणि-मात्र में मित्र-दृष्टि का पुण्य व्यवहार? वह असत् अवस्था थी,यह सत् अवस्था है। वह मर्त्य लोक था, वह अमर्त्य लोक है। वहाँ ईर्ष्या के, मत्सर के, राग के, द्वेष के हाथों एक मनुष्य, देखने में दूसरे मनुष्यों की, परन्तु वास्तव में अपनी आप चिता चुन रहा था, यहाँ विश्व प्रेम, आत्म-बलिदान, लोकोपकार, प्राणियों के स्वभाव में ही है, मनुष्य दूसरे का हित करता-करता सबसे अधिक अपना ही हित कर जाता है। जो अमृत की प्याली दूसरे के मुँह से लगाई जाती है, वह दूसरे के मुँह से लगती-लगती हमारी अपनी आत्मा को एक अलौकिक अमरता सी दे जाती है। हम अपने किसी गिरे हुए बन्धु का उद्धार कर रहे हैं-इसी विचार से हमारा उद्धार हो जाता है। किसी के पैर से कांटा निकाल कर हमारी अपनी व्यथा शान्त हो-यह आनन्द अपने स्वार्थ-पूर्ण जीवन को निष्कण्टक कर देने से भी कहाँ था? यज्ञिय-जीवन का स्वाद यज्ञिय-जीवन ही में है।

यह जीवन उषःकाल की लालिमा-सा है। इसमें वही रमणीयता, वही सौन्दर्य, वही जादू, वही अलौकिक ऋद्धि-सिद्धि है। वह सिद्धि स्वार्थ के त्याग की है। छोड़ दिये स्वार्थ के सम्मुख कुबेर का कोष कंकरी सा प्रतीत होता है। मनुष्य धन का स्वामी तभी बनता है जब उसे देकर भी सुखी हो सके। इससे पूर्व वह धन का दास था, यही **'विवस्वत्'** सिद्धि है। सूर्य प्रकाश का दान कर रहा है और इसी दान मे वह मस्त है। उषा की गोद में प्रकाश वितरण करने के उत्सुक बाल-सूर्य को कोई देखे! वह उल्लास की, प्रेम की अनुपम मूर्ति, निबिड़ अन्धकार में पड़ी आत्माओं को भी अकथनीय ज्योति प्रदान कर जाती है। यही अवस्था किसी जातवेद अग्नि के उपासक किसी **'दाश्वान्'** की है-आत्मसमर्पक यजमान की है।

आध्यात्मिक जीवन की इस उषा में उसे सब ओर देवता ही देवता दीख रहे हैं। उसके अन्दर के देव जग गए हैं और बाहर के देवों का उन्होनें झट-पट आह्वान कर लिया है। उसकी यज्ञाग्नि प्रबुद्ध है। यज्ञाग्नि ने उसके जीवन में शुद्ध परोपकार की प्रभात-बेला सी ला दी है। यह पुण्य प्रभात दिव्य भावनाओं का आलौकिक आह्वान है। अग्नि के जागते ही सभी देव जग गए हैं। यजमान के अन्दर-बाहर देव ही देव हैं, द्युलोक ही द्युलोक है। अमर उषा है, विवस्वान् की-सी ऋद्धि-सिद्धि है।

हे जातवेद अग्नि! इसी सिद्धि का साधक हमें बनाओ। आज, अभी, इसी क्षण। अग्नि-देव। यह पुण्य-बेला फिर कब आएगी? साधक को साधना का मार्ग दीख रहा है।

❑❑❑

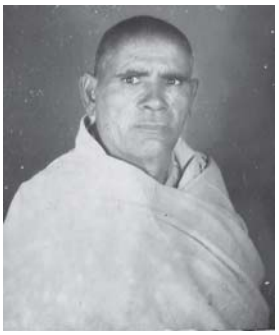

शांतिप्रवाह--- पुनर्प्रकाशन   सितम्बर २००६ अंक का सम्पादकीय

आतंकवाद का प्रत्यक्ष युद्ध

❑**स्व० पण्डित चन्द्रभानु आर्योपदेशक,** संस्थापक शांतिधर्मी

स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर भारतवर्ष के महामहिम राष्ट्रपति डॉ० ए० पी० जे० अब्दुल कलाम ने आतंकवाद की ज्वलंत समस्या के संबंध में अपने स्पष्ट और मार्गदर्शक विचार प्रकट किए हैं। आतंकवाद आज किसी एक प्रांत, जाति, धर्म या मत मजहब की समस्या नहीं रहा है, आतंकवाद आज एक वैश्विक समस्या बन चुका है। विश्व समुदाय इसके निरोध के लिए अपने अपने स्तर पर गंभीर प्रयास करता नजर आ रहा है। इसकी कार्यप्रणाली और तानाबाना इतना दृढ़ हो चुका है कि विश्व का शायद ही कोई कोना हो जहाँ आतंकवाद के सूत्र और प्रभाव न हों। पिछले दिनों मुम्बई में हुए बम धमाकों और इंग्लैंड में विमानों को उड़ाने के षड्यंत्र- इन घटनाओं के सूत्र एक ही स्थान पर जाकर जुड़ते हैं। इन सब घटनाओं में पाकिस्तान के नागरिक या एक ही मत विशेष के लोग संलिप्त पाए जाते हैं। इन घटनाओं से यह भी पता चलता है कि आतंकवाद अब अलग -२ मारधाड़ करने वाले छोटे मोटे गिरोहों का कार्य नहीं रह गया है अपितु यह एक विश्वस्तरीय संगठन के निर्देशन में काम करता है। विश्व परिदृश्य की अपेक्षा भारत के लिए आतंकवाद बड़ी चुनौती है। अमरीका और ब्रिटेन की अपेक्षा भारत में उस समुदाय विशेष से जुड़े लोग अधिक संख्या में निवास करते हैं, और उनमें से बहुत से देशभक्त भी हैं। इसलिये उन को चिह्नित करने में और भी ज्यादा चुनौतियाँ हैं। सबसे बड़ी चुनौती तो यह है कि आतंकवाद की गंभीरता का सही आकलन नहीं किया जा रहा है, और इसे कुछ असंतुष्ट लोगों की गतिविधियाँ मात्र समझा जा रहा है। यह हमारे देश में ही हो सकता है कि किसान मजदूरों के हकों की आवाज उठाने वालों पर देशद्रोह के मुकदमें चलें और निर्दोष लोगों की हत्या कर देश तोड़ने का षड़यंत्र करने वालों को पांच सितारा होटलों में मुर्गमुसल्लम की पार्टियों में बातचीत के लिए बुलाया जाए।

राष्ट्रपति ने कहा कि आतंकवाद के खतरों को समझा जाए। आतंकवाद का सुनियोजित होना आज सबसे बड़ा खतरा है। आतंकवाद सुनियोजित है, यही सबसे बड़ा खतरा है। इसको किस किस का समर्थन प्राप्त है, यह भी गंभीर विषय है। यदि कुछ भूले भटके लोग इस प्रकार की गतिविधियों में संलिप्त हैं तो जो भूले भटके नहीं हैं वे उनकी गतिविधियों को निंदित क्यों नहीं ठहराते? इससें अनुमान लगाना चाहिए कि आतंकवाद का उद्‌गम कहाँ है? सभी धर्मों को समान मानने वाले मासूम बुद्धिजीवियों को देखना चाहिए कि कौन से धर्मग्रंथ, उस मत विशेष को न मानने वाले लोगों की हत्या को औचित्य प्रदान करते हैं। नेता लोग कोई आतंकवादी घटना होने पर जिसमें एक ही समुदाय के सैंकड़ों लोगों की जानें चली जाती हैं, सांप्रदायिक सौहार्द और शांति बनाए रखने की अपील करते हैं। उन्हें लगता है कि इन घटनाओं से सांप्रदायिक तनाव फैल सकता है। वे अपनी निर्दोष जनता की रक्षा करने के लिए सेना और पुलिस को पूरे अधिकार क्यों नहीं देते? इससे बड़ी बेशर्मी और क्या हो सकती है कि एक राष्ट्रीय स्तर के संगठन के मुख्यालय पर हुए हमले के बाद एक नेता का बयान आया कि यह हमला उसी संगठन ने कराया है। मुम्बई बम विस्फोट के लिए शिवसेना को दोष देने वाले नेता को संभवतः अलकायदा को महात्मा बुद्ध का अहिंसावादी अनुयायी सिद्ध करने का यही मौका मिला है।

अमरीका और भारत के आतंकवाद के संदर्भ अपने अपने हैं लेकिन आतंकवाद के सर्वोच्च संगठन की दृष्टि में यह एक ही है। उनके लिए प्रत्येक काफिर शत्रु है। अमरीका के लोग अपने देश पर आक्रमण के बाद एकजुट हो गए और हमारे देश के लोग आतंकवाद के युद्ध के समय अपने अपने राजनैतिक स्वार्थों पर दृष्टि गढ़ाए हैं। बल्कि बहुत से तो आतंकवाद की जड़ों को ही जानबूझकर पुष्पित पल्लवित कर रहे हैं। कभी वे सिमी जैसे प्रतिबंधित संगठन को पाक पवित्र होने का प्रमाणपत्र देते दिखाई देते हैं और कभी पाकिस्तान के साथ दोस्ती का हाथ बढ़ाने की वकालत करते हैं।

राष्ट्रपति के ये शब्द जो अखबार में छपे, मुझे बड़े मार्मिक लगे- 'जब दुष्ट लोग एकजुट हो रहे हैं तो अच्छे लोगों को उनसे निपटने के लिए एक साथ आना जरूरी है।' उन्होंने कहा कि यह एक राष्ट्रीय चिन्ता का मसला है और सभी लोगों को व्यक्तिगत वैचारिक मतभेद भुलाकर एकता की भावना के साथ इससे निपटना होगा। राष्ट्रपति ने इसे एक परोक्ष युद्ध माना है और इससे निपटने के लिए एक राष्ट्रीय अभियान चलाने का आह्वान किया है। अच्छे लोगों के संगठन के बिना ही दुष्ट लोग पनपते हैं। इस राष्ट्रीय चुनौती के समय में केवल अच्छा होना ही काफी नहीं है बल्कि शक्तिशाली और संगठित होना भी आवश्यक है। इस युद्ध में सभी भारतवासियों का और सरकार का एक ही कार्यसूत्र होना चाहिए- निर्दोष जनता व भारत की संप्रभुता की रक्षा, देशभक्तों को सम्मान और गद्दारों को दण्ड।

आखिर कब तक?

❒प्रिं० राजकुमार वर्मा, पटियाला चौक जींद

आखिर कब तक यह सिलसिला चलता रहेगा?
कब तक कश्मीर यूँ ही जलता रहेगा।
कब तक पड़ौसी कर के षडयंत्र,
हमें यूँ ही छलता रहेगा!!
कब तक देश का जवान,
बेमौत मरता रहेगा!!
हद हो गई, अब तो जागो।
देश वासियो! ढूंढ ढूंढ कर
इन उग्रवादियों को मार डालो।
जला डालो घर उनके,
फूँक डालो उनकी बस्तियाँ,
मिटा डालो संसार से ही उनकी हस्तियाँ।
आओ मिल के हम ये कसम खा लें,
अपने जवानों को मरने से बचा लें।
देश से बड़ा कोई फर्ज नहीं होता,
देश से बड़ा कोई कर्ज नहीं होता।
आओ आज इस कर्ज को उतार डालें,
उग्रवाद के फुंफकारते सर्प को मार डालें।।
(पुलवामा के शहीद को समर्पित)

गजल

-डॉ० स्वर्ण किरण सोहसराय-८०३११८

जल रही है सायँ-सायँ आग, शांति मिले तो कैसे,
धोये धुल नहीं पाता दाग, शांति मिले तो कैसे?
स्वार्थ की आंधी, रोके रुक नहीं पाती,
भौंचक है उड़ता हुआ काग, शांति मिले तो कैसे?
देश व्यक्ति से छोटा, व्यक्ति बड़ा कैसे,
भीतर का गायब अनुराग, शांति मिले तो कैसे?
जहन्नुम के रास्ते की ओर बढ़ना मुश्किल कहाँ है,
भाग्य क्या अलग बेलाग, शांति मिले तो कैसे?
चालबाजी, काइयांपन, दोस्ती का नाटक करना-
असमय में खेलना फाग, शांति मिले तो कैसे?

मैं हूँ वेदभारती

❒कवि कार्तिक अय्यर, नागपुर

रुद्र संज्ञक और वसुओं साथ हो मैं विचारती।
वायु, जल है मेरे वश में, भूमि को मैं धारती।।
आदित्य विद्याविद् और वैज्ञानिकों को तारती।
मैं राष्ट्री हूं मैं संगमनी वागांभृणि वाणीश्वरी हूँ,
पालती हूँ देश सुन लो, मैं हूँ राष्ट्र-भारती।।१।।
राष्ट्र के जो शत्रु हैं, मर्दन उन्हीं का मैं करूँ।
जो सौम्य, साधकजन समर्पित लोग उनको ही वरूँ।।
शिल्पविद्या पूषणों का बल सदा ही दे रही।
देश-घातक राक्षसों का तेज उनसे ले रही।।
यज्ञ यानी दान पूजा देव की करते सदा।
वे ही सब यजमान पाते धन मुझी से सर्वदा।।
उत्पादिका मैं राष्ट्र का ऐश्वर्य उर में धारती।
जो विप्र विद्यायुक्त उन पर राष्ट्र का धन वारती।।
शत्रुदल की मारिणी, मैं साधुओं की धारिणी हूँ
पालती हूँ देश सुन लो, मैं हूँ राष्ट्र-भारती।।२।।
जो सौम्य बनकर राष्ट्र-सेवा, दस्युओं पर काल-से।
वे पुत्र ही मेरे समझिये तेजधारी लाल-से।।
जो भी जितना भी प्रबल हो, मैं कभी न हारती।
जो सताये सज्जनों को मैं उन्हें ही ताड़ती,
चुनते सभी विद्वान्, मानुष चुनते रहेंगे ही सदा,
पालती हूँ देश सुन लो, मैं हूँ राष्ट्र-भारती।।३।।
देवताओं की सभा हूँ राष्ट्र की हूँ स्वामिनी।
व्यवहार उत्तम कार्य का निर्णय करूं मैं मानिनी।।
देवता विद्वान् बसते नागरिकजन को गिनूँ।
बहुत रूपों में दिखूँ और बहुत रूपों में बनूँ।।
प्रचुर हैं अधिकार मेरे शक्तियों से पूजिता।
हूँ प्रजा की तारिका मैं हूँ जनों से कूजिता।।४।।

(वागांभृणि सूक्त पर आधारित)

राष्ट्र-चिन्तन

आज के युग में चरित्र निर्माण की महती आवश्यकता

❑पं० उम्मेदसिंह विशारद, वैदिक प्रचारक,
गढ़ निवास मोहकमपुर, देहरादून मो०-9411512019, 9557641800

महर्षि दयानन्द जी ने अपने ग्रन्थों में उत्तम चरित्र निर्माण पर अत्यधिक बल दिया है। उनका मानना था-जो मनुष्य का उत्तम चरित्र होगा तो परिवार व समाज भी उत्तम होगा। उत्तम चरित्रवान स्वभाव बनाने के लिये पांच बातों का ध्यान रखना चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति अपने आप में एक इकाई है और किसी परिवार का अंग है, किसी समाज का, राष्ट्र का, विश्व का भी सदस्य है। अपने व अन्य परिवार के सहयोग से उसका पारिवारिक जीवन है। वह समाज का, राष्ट्र का, विश्व का नागरिक है। उसके रिश्ते नाते में कई भूमिकाएँ हैं। वह अपने में पांच प्रकार के चरित्रों का निष्पादन करें। बहुत कम लोग इन चरित्रों को समझते हैं, उन पर चलते हैं। धर्मात्मा समाज सुधारक आदर्श पुरुष वही है जो इन पाँच चरित्रों को अपने जीवन मे धारण करता है- १- वैयक्तिक चरित्र, २- पारिवारिक चरित्र, ३- सामाजिक चरित्र, ४- राष्ट्रीय चरित्र, ५- वैश्विक चरित्र। इन चरित्रों के संस्कार वेदानुकूल आर्ष ग्रन्थों के स्वाध्याय से ही प्राप्त हो सकते हैं। कृपया पांचों का विश्लेषण स्वयं कीजियेगा।

समाज और व्यक्ति का उत्कर्ष

जिस समाज में परमार्थ वृत्ति नहीं होगी, उसका अस्तित्व स्थिर रहना असम्भव है। परिवार, समाज के व्यवहारिक संबन्धों में परस्पर प्रेम, सहानुभूति और आत्मीयता की भावनाएँ नष्ट हो जाएँ तो समाज के अविकसित, असमर्थ, वृद्ध, अपंग, अपाहिज, दु:खी लोगों का जीवन दूभर हो जायेगा। परस्पर अविश्वास, सन्देह, भय, शंका की वृद्धि होगी। इससे समस्त समाज में विकृतियाँ, दोष पैदा हो जायेंगे। सहानुभूति, सौजन्य, सेवा, सहायता, सहयोग, संगठन आदि पर समाज का विकास निर्भर करता है। इनसे ही परमार्थ, परार्थ= दूसरों के लिए जीवन सम्भव है। स्वार्थ और संकीर्णता से समाज मे विघटन, संघर्ष आदि का ही पोषण होता है।

वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना

परमात्मा ने जीवन के आवश्यक साधन सबको समान रूप मे वितरित कर यह सिद्ध किया है कि उसने समाज में जाति-पाँति, भाषा, विचार, वर्ण में कोई भेदभाव नहीं किया। सारा विश्व एक प्रेम के सूत्र में बंध सकता है, यदि सभी लोग संसार को एक कुटुम्ब की भावना से देखें और परस्पर वैसा ही प्रेम करें जैसे अपने परिवार के सदस्यों से करते हैं। ईश्वर का आदेश भी ऐसा ही है कि पूर्ण और परिवक्व बनो।

सन्मार्ग का सत्यपथ कभी न छोड़ें

मानव का जीवन कंटीली झाड़ियों की तरह है, इसे पार करना काफी दूरदर्शिता और विवेक द्वारा ही सम्भव है। सदाचार, सत्धर्म, विवेक, दूरदर्शिता की सीधी सड़क इसे पार करने के लिए बनी है। उस पर चलते हुए लक्ष्य पर पहुंचने में समय तो लगता है, पर इसमें जोखिम नहीं है। अनीति पर चलकर जल्दी काम बना लेने व अधिक कमा लेने का लालच एक छोटी सीमा तक ही सिद्ध होता है। आगे इसमें भारी विपत्तियाँ आती हैं। सबसे बडा दण्ड आत्म प्रतारण का है। अनीति के मार्ग पर चलने वाले को उसकी अन्तरात्मा निरन्तर धिक्कारती रहती है। मानव जीवन सत्कर्मों से स्वयं शान्ति पाने व दूसरों को सुख देने के लिए मिला है।

विवेक की कसौटी पर प्रतिपादनों को कसें

कुछ मतभेद लोक कल्याण और कुछ व्यक्तिगत स्वार्थ के साथ जुड़े होते है। उनमें से जनमत किसे स्वीकार करे, इसके लिए जनमानस की विवेकशीलता जगानी पड़ती है। जीवन के इन प्रतिपादनों को वैदिक ज्ञान की कसौटी पर सत्याचरण द्वारा अपनाना ही उचित है।

काल्पनिक मदभेदों की हठवादिता

अनेकानेक क्षेत्रों में विविध मान्यताएँ प्रचलित हैं। एक व्यक्ति के लिये एक को सत्य और दूसरे को मिथ्या कहना सरल नहीं है। कभी वह परिस्थितियों के अनुसार अधिक सत्य माना जाता होगा, पर अब और नये प्रतिपादन सामने आ जाने पर उस तथाकथित सत्य पर अंगुली उठने लगी हो। विज्ञान के क्षेत्र में निरन्तर यही हो रहा है। नयी खोज करने पर पिछले प्रतिपादनों का खण्डन होता रहता है। धार्मिक क्षेत्र में छाये अन्धविश्वास, प्रपंच, बहकावे अपने ढंग के अनोखे हैं। गुरुडम इसी आधार पर पनपा है। एक पंथ वाले अपने शिष्यों को दूसरे पंथ वालों के यहाँ जाने से इसलिए रोकते हैं कि कहीं उनकी विवेक बुद्धि जाग न जाए। इसी आधार पर दुराग्रहों की अपनी-अपनी परिधि बनी हुई है। विचारशील व्यक्तियों का कर्त्तव्य है कि इन अन्ध परम्पराओं से जनता को सन्मार्ग दिखाएँ। सृष्टि क्रमानुसार वेद की मान्यताओं व सत्य ईश्वरीय धर्म के मार्ग पर चलने की समाज को प्रेरणा देने से समाज का नवनिर्माण संभव है।

जयन्ती/बोध पर्व

आर्य मान्यताओं के पुनः संस्थापक– दयानन्द सरस्वती

❑**कृष्णचन्द्र गर्ग** ८३१ सैक्टर १०, पंचकूला, हरियाणा (०१७२–४०१०६७९)

'मैं वेदों में कोई बात युक्तिविरुद्ध वा दोष की नहीं देखता और उन्हीं पर मेरा मत है।'

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के जीवन में अन्दर बाहर सत्य और सात्विकता ओतप्रोत थी। वे हर प्रकार के आडम्बर से परे थे। लोकोपकार उनका एकमात्र लक्ष्य था। परमात्मा ने उन्हें बुद्धिबल और नैतिक बल गजब का दिया था। उन्होंने समाज की स्थिति का तथा पुस्तकों का स्वाध्याय खूब किया था। उनकी स्मरण शक्ति कमाल की थी। व्याख्यान वे सरल और स्पष्ट भाषा में दिया करते थे। उनकी शैली मधुर और तर्कपूर्ण होती थी। उन्होंने सोई हुई हिन्दू जाति को जगाया। उसके खोए हुए गौरव को वापिस दिलाया। उसकी कायरता, अज्ञानता, भीरुता और अन्धविश्वास को धोया।

महर्षि दयानन्द ने डंके की चोट से ऐलान किया कि आर्य लोग, जो आजकल हिन्दू कहलाते हैं, भारतवर्ष के ही मूल निवासी हैं। इस बात का कोई प्रमाण नहीं है कि आर्य भारत में कहीं बाहर से आए थे। आर्यों का संस्कृत साहित्य ही संसार में सबसे पुराना साहित्य है। संस्कृत के किसी ग्रन्थ में नहीं लिखा कि आर्य भारतवर्ष में कहीं बाहर से आकर बसे थे। इस देश का सबसे पहला नाम आर्यावर्त्त था अर्थात् आर्यों का देश। उससे पहले इसका कोई और नाम न था। इस प्रकार उन्होंने हिन्दुओं के मनोबल को बढ़ाया।

स्वामी जी हिन्दुओं की सभी कमियों और कमजोरियों के लिए पुराणों को जिम्मेदार मानते थे। वे पुराणों को महर्षि वेद व्यास जी की रचना न मानते थे। वे लिखते हैं– 'जो अठारह पुराणों के कर्ता व्यास जी होते तो उनमें इतने गपौड़े न होते, क्योंकि शारीरक सूत्र, योगदर्शन के भाष्य आदि व्यास जी कृत ग्रन्थों को देखने से पता लगता है कि वे बड़े विद्वान, सत्यवादी, धार्मिक, योगी थे। वे ऐसी झूठी बातें कभी न लिखते जैसी पुराणों में हैं।'

स्वामी जी मूर्तिपूजा को भारत के सारे अनिष्ठों का मूल मानते थे। पुराणों ने ही मूर्तिपूजा को प्रोत्साहित किया और आर्यत्व की कब्र खोद दी। अवतारवाद, जन्म पर आधारित जाति–प्रथा, सती प्रथा, विधवा विवाह का निषेध आदि, अनेक ऐसी कुरीतियाँ थीं, जिनके कारण हिन्दू बदनाम हैं, सबको पुराणों में मान्यता प्राप्त है। पुराणों की ऐसी मान्यताएं वेद विरुद्ध हैं। यदि पुराण और पौराणिक विचार हिन्दुओं में न होते तो ईसाईयों और मुसलमानों को हिन्दुओं के विरोध में कहने को कुछ भी न मिल पाता और न ही इतनी आसानी से हिन्दू मुसलमान और ईसाई बनते।

महर्षि सत्य के प्रबल पक्षधर थे। आर्यसमाज के दस नियमों में चौथा नियम उन्होंने दिया– सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए। वे मानते थे कि मनुष्य का आत्मा सत्यासत्य को जानने वाला है, परन्तु पण्डित लोग अपनी प्रतिष्ठा–हानि और निन्दा भय से सत्य को प्रकट नहीं करते। उन्होंने 'स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाश' में उपनिषद का श्लोक उद्धृत किया है–

न हि सत्यात्परो धर्मो नानृतात्पातकं परम्।
न हि सत्यात्परं ज्ञानं तस्मात्सत्यं समाचरेत्।।

अर्थात सत्य से बढ़कर कोई धर्म नहीं है, झूठ से बढ़कर कोई पाप नहीं है और सत्य से बढ़कर कोई ज्ञान नहीं है। इसलिए सत्य का आचरण करें।

महर्षि दयानन्द दिखावे के बाहरी चिह्नों को धर्म से न जोड़ते थे। वे जब किसी को रुद्राक्ष पहने देखते थे तो उससे कहा करते थे कि इन गुठलियों के पहनने से क्या लाभ है। इससे मुक्ति नहीं होती। मुक्ति तो ज्ञान से होती है। मनुस्मृति में भी कहा गया है– 'न लिंगम् धर्म कारणं' अर्थात् बाहरी चिह्नों से व्यक्ति धार्मिक नहीं बनता। धार्मिक तो शुभ आचरण से बनता है। महर्षि मनु ने कहा है– आचारः परमो धर्मः।

महर्षि दयानन्द मानते थे कि हमारा नाम आर्य है, हिन्दू नहीं। आर्य का अर्थ है– श्रेष्ठ। अरब के लोग काफिर और दुष्ट को हिन्दू कहते हैं। उन्होंने हमें हिन्दू नाम दिया।

स्वामी जी श्रीकृष्ण जी को एक महापुरुष मानते थे। सत्यार्थप्रकाश में वे लिखते हैं– 'देखो! श्री कृष्ण जी का इतिहास महाभारत में अति उत्तम है। उनका गुण, कर्म, स्वभाव और चरित्र धर्मात्माओं के समान है। जिसमें कोई अधर्म का आचरण श्री कृष्ण जी ने जन्म से मृत्यु तक बुरा काम कुछ भी किया हो, ऐसा नहीं लिखा। और इस भागवत वाले ने अनुचित मनमाने दोष लगाए हैं। दूध, दही, मक्खन आदि की चोरी, कुब्जा दासी से सम्भोग, परस्त्रियों से रासमण्डल, क्रीड़ा आदि झूठे दोष श्री कृष्ण जी में लगाए

हैं। इसको पढ़-पढ़ा, सुन-सुना के अन्य मत वाले श्रीकृष्ण जी की बहुत सी निन्दा करते हैं। जो यह भागवत न होता तो श्रीकृष्ण जी जैसे महात्माओं की झूठी निन्दा क्योंकर होती।'

महर्षि दयानन्द ने राष्ट्रीय स्वाभिमान को जगाया, विशुद्ध भारतीयता पर बल दिया। सत्य-असत्य विवेक की प्रवृत्ति को जगाया, बुद्धिवाद को बढ़ावा दिया, अन्धविश्वास और रूढ़िवाद का खण्डन किया।

स्वामी जी का दरबार मित्र, शत्रु सबके लिए खुला था। वे सबके साथ प्रेम से बर्ताव करते थे। परन्तु यदि कोई उनके साथ दुष्टता का व्यवहार करने लगता तो वे रुद्ररूप धारण करके उसे दण्ड देने को तैयार हो जाते थे।

सन १८७३ में कलकत्ता में स्वामी जी अपने व्याख्यानों में कहा करते थे कि जब तक वेद न पढ़ाए जायें संस्कृत की शिक्षा से कोई लाभ नहीं। पुराणों की बुरी शिक्षा से लोग व्यभिचारी हो जाते हैं और जो विचारशील हैं वे धर्म से पतित होकर हानिकारक बन जाते हैं। स्वामी जी कहते थे कि पत्थरों को पूजने से पण्डितों की बुद्धि पत्थर हो गई है। इस कारण से वे सत्य-सिद्धान्तों को समझने में असमर्थ हैं। मैं उनकी जड़पूजा छुड़वाकर उनकी बुद्धि को निर्मल करने का प्रयत्न कर रहा हूँ। वे यह भी कहते थे- 'मेरा काम लोगों के मनमन्दिरों से मूर्तियाँ निकलवाना है, ईंट-पत्थर के मन्दिरों को तोड़ना-फोड़ना नहीं है।'

सन १८७४ में मुम्बई में अनेक अंग्रेज कर्मचारी स्वामीजी से मिलने और उनके व्याख्यान सुनने आया करते थे और उनकी प्रशंसा करते थे। स्वामीजी अंग्रेजी राज्य प्रबंध की प्रशंसा किया करते थे। इसी कारण बहुत से लोग उन्हें अंग्रेजों का गुप्तचर कह दिया करते थे। १८७४ में नासिक में स्वामी जी ने यह भी कहा कि भारत में सही अर्थों में अंग्रेज ही ब्राह्मण हैं।

सन १८७८ में अजमेर में राय बहादुर श्यामसुन्दरलाल ने स्वामीजी से कहा कि आप मूर्तिपूजा पर इतना तीव्र आक्रमण क्यों करते हैं, उसे थोड़ा नम्र कर देने से भी तो काम चल सकता है। स्वामी जी ने उत्तर दिया- यह हम भी जानते हैं कि मूर्तिपूजा पर आक्रमण का वेग कुछ कम करने से अनेक लोग हमारे पक्ष में आ सकते हैं, और हमारे प्रति निन्दा और अत्याचार भी कुछ कम हो जावेगा, किन्तु इससे हमारे व्रत का उद्देश्य शीघ्र ही शिथिल हो जायेगा। मूर्तिपूजा पर मृदु आक्रमण करने व उससे किसी प्रकार की सन्धि करने से हमारे सिद्धान्तों की भी वही दशा होगी जो अन्य सिद्धान्तों की हुई है और कुछ समय के बाद आर्यसमाज पौराणिक हिन्दुओं में मिल जायेगा।

सन् १८७९ में दानापुर में एक दिन एक सज्जन ने स्वामी जी से कहा कि आप इस्लाम के विरुद्ध न कहा करें। उस समय तो स्वामीजी ने कोई उत्तर न दिया। परन्तु सायंकाल को जो व्याख्यान दिया वह आदि से अन्त तक इस्लाम के सिद्धान्तों पर ही था, जिसमें उनकी तीव्र समालोचना की। व्याख्यान का आरम्भ ही इन शब्दों से किया कि मुझे कहा गया है कि मुसलमानी मत का खण्डन मत करो, परन्तु मैं सत्य को छिपा नहीं सकता। जब मुसलमानों की चलती थी तब वे हम लोगों का तलवार से खण्डन करते थे। अब यह अन्धेर देखो कि मुझे उनका जिह्वा मात्र से खण्डन करने से मना करते हैं। मैं ऐसा अच्छा राज्य पाकर भला किसी की पोल खोलने से कभी रुक सकता हूँ।

एक दिन पण्ड्या मोहनलाल ने स्वामी जी से प्रश्न किया कि भारत का पूर्ण हित और जातीय उन्नति कब होगी। स्वामीजी ने उत्तर दिया कि एक धर्म, एक भाषा और एक लक्ष्य बनाए बिना ऐसा होना मुश्किल है।

वेदों के सम्बन्ध में महर्षि लिखते हैं- 'मैं वेदों में कोई बात युक्तिविरुद्ध वा दोष की नहीं देखता और उन्हीं पर मेरा मत है।' महर्षि का यह मत सभी ऋषि-मुनियों के मत के अनुकूल ही है। वैशेषिक दर्शन में महर्षि कणाद लिखते हैं- बुद्धिपूर्वा वाक्कृतिर्वेदे। अर्थात वेद का प्रत्येक वाक्य समझदारी से बना है। महर्षि मनु कहते हैं- यस्तर्केणानुसन्धते तं धर्मं वेद नेतरः। अर्थात् जो युक्ति से सिद्ध हो वही वेद का धर्म है, और कोई नहीं।

महर्षि दयानन्द वेदों को ईश्वरकृत तथा सब सत्य विद्याओं का पुस्तक मानते थे। वे वेद पढ़ने का अधिकार स्त्री-पुरुष, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र सबका मानते थे और वे मानते थे कि वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

महर्षि दयानन्द का स्वाध्याय बहुत विस्तृत था। 'भ्रान्ति निवारण' पुस्तक में पण्डित महेशचन्द्र न्यायरत्न को उत्तर देते हुए वे लिखते हैं- 'मैं अपने निश्चय और परीक्षा के अनुसार ऋग्वेद से लेके पूर्व मीमांसा पर्यन्त अनुमान से तीन हजार ग्रन्थों के लगभग मानता हूँ।'

अंग्रेजी राज्य के सम्बन्ध में- २३ नवम्बर १८८० को थियोसौफिकल सोसायटी की मैडम ब्लेवास्तिकी को लिखे पत्र में स्वामी दयानन्द भगवान को धन्यवाद देते हैं कि अंग्रेजी राज्य में मुसलमानों के अत्यचार से कुछ-कुछ छुटकारा मिला है। 'मैं तथा अन्य सज्जन लोग पुस्तकें लिखने, उपदेश देने तथा धर्म के विषय में स्वतन्त्र हैं। इसका कारण इंग्लैण्ड की महारानी, पारलियामैंट तथा भारत में राज्याधिकारी धार्मिक, विद्वान और सुशील हैं। अगर ऐसा

(शेष पृष्ठ ३३ पर)

व्यक्तित्त्व

स्वामी श्रद्धानंद के जीवन का एक विस्मृत प्रसंग

❑डॉ० विवेक आर्य, शिशु रोग विशेषज्ञ
drvivekarya@yahoo.com

(स्वामी श्रद्धानन्द के व्यक्तित्त्व का एक विशेष गुण था– निर्भीकता। यह गुण उन महान व्यक्तियों में पाया जाता है जो ईश्वरीय मार्ग के पथिक होते हैं। सत्य से अनुराग, ईश्वर से अथाह प्रेम, आत्मा को अनश्वर मानना, कर्मफल व्यवस्था में दृढ़ विश्वास, प्राणिमात्र के प्रति प्रबल सेवा भावना, सदाचार और संयमयुक्त नियमित दिनचर्या, वेदादि धर्मशास्त्रों का साक्षात् ज्ञान; ये गुण जिसमें होंगे वह व्यक्ति पहाड़ के समान कष्ट को भी निर्भीकता से झेल जायेगा। स्वामी दयानन्द शताब्दियों पश्चात् पैदा हुई ऐसी ही एक महान विभूति थे, जिनके महान जीवन से जाने कितनों का उद्धार हुआ। ऐसी ही एक महान आत्मा जो दयानन्द रूपी कुंदन के स्पर्श से सोना बन गई, जिनका पूरा जीवन मानवमात्र की सेवा के लिए आहुत हुआ, वे थे– स्वामी श्रद्धानंद। (महात्मा मुंशीराम जिज्ञासु) स्वामीजी का अन्यतम गुण था निर्भीकता। यहाँ हम उनके ऐसे ही एक निर्भीकता के प्रसंग को पढ़ेंगे जिसे प्रायः विस्मृत किया जा चुका है। यह स्वामीजी के धर्मशाला प्रवास से सम्बंधित है। यह सामग्री मुझे आचार्य रामदेवजी द्वारा अंग्रेजी में प्रकाशित 'वैदिक मैगजीन' के सं० १९६७ के अंकों से मिली है। –लेखक)

१९०९ में पटियाला प्रसंग के पश्चात् स्वामी श्रद्धानंद (महात्मा मुंशीराम) जी का स्वास्थ्य कुछ बिगड़ गया था। आप उन दिनों पटियाला अभियोग पर एक पुस्तक का लेखन भी कर रहे थे। इस अंग्रेजी पुस्तक का नाम था–The Aryasamaj and its Detractors- A vindication. आप गुरुकुल के कुछ ब्रह्मचारियों और अपने जमाता डॉ० सुखदेव जी के साथ धर्मशाला के पहाड़ों में स्वास्थ्य लाभ के लिए चले गए। महात्मा जी पूर्व में शीर्ष अंग्रेज अधिकारी सर जान हेविट (Sir John Hewett) से मिलकर आर्यसमाज के पक्ष को भली प्रकार से प्रस्तुत कर चुके थे कि आर्यसमाज एक धार्मिक संस्था हैं, जिसका उद्देश्य अंग्रेज सरकार के विरुद्ध किसी भी कार्य में भाग लेना नहीं हैं, आर्यसमाज सरकारी नियमों का पालन करने के प्रति प्रतिबद्ध है। महात्मा जी के पक्ष को सुदृढ़ रूप से स्थापित करने के पश्चात् भी उन्हें रेल में सफर करते समय प्रताड़ित करने का प्रयास किया गया। धर्मशाला में जहाँ वे रुके थे, उस स्थान के आसपास CID के जासूस सदा उन पर निगरानी रखते थे, उनकी गतिविधियों के बारे में आस–पड़ोस में पूछते रहते थे। उनकी डाक के साथ भी छेड़खानी की जा रही थी। उनके साथ ऐसा व्यवहार किया जा रहा था जैसे कि वह कोई संगीन अपराधी हों। महात्मा जी ने इस दुर्व्यवहार को गंभीरता से लिया।

उन्होंने १५ जून, १९१० को जिला पुलिस अधिकारी को पत्र लिखा–

मैं धर्मशाला में स्वास्थ्य लाभ के लिए आया हूँ। शेष समय में अपनी पुस्तक के लेखन में व्यतीत करना चाहता हूँ। मैंने पाया कि आपका एक कर्मचारी यह जानने का प्रयास कर रहा है कि मैं अपनी पुस्तक में क्या लिख रहा हूँ। यह जानकारी मैं अपने मित्रों से साँझा कर रहा हूँ। अगर वह व्यक्ति मुझसे आकर सीधा पूछ लेता तो मैं यह जानकारी उसे सीधा ही बता देता। अभी तक मेरे स्वास्थ्य ने मुझे लेखन कार्य का अवकाश नहीं दिया है। मैं जो लिखना चाहता हूँ उसे एक सार्वजानिक सूची के रूप में सलंग्न कर रहा हूँ। अगर आपको इसके अतिरिक्ति कुछ अन्य जानकारी चाहिए तो आप मुझे सीधा लिख सकते हैं। मैं किसी भी प्रकार की अनावश्यक गलतफहमी नहीं चाहता।

आपका विनीत, मुंशीराम जिज्ञासु

इस पत्र के साथ एक अंग्रेजी में विज्ञप्ति सलंग्न थी जिसका शीर्षक था The Aryasamaj and its Detractors- A vindication. इस विज्ञप्ति में आर्यसमाज को एक धार्मिक संगठन ठहराया था। उन्होंने यह भी लिखा कि भारत देश में, जो वैदिक धर्म का उत्पत्ति देश है, वहां भी सभी धार्मिक संस्थाओं में आर्यसमाज सबसे अधिक भ्रांतियों का शिकार है। ऐसे में विदेशी लोगों का भ्रम में पड़ना स्वाभाविक है, क्योंकि उनकी जानकारी का मुख्य स्रोत पक्षपाती अंग्रेजी प्रेस है। आत्मा को गर्वित करने वाली आर्यसमाज की शिक्षा जहाँ एक ओर हजारों पुण्यात्माओं का अज्ञान और अन्धविश्वास से पुनरुद्धार कर रही है, वहीं इसकी सफलता पक्षपाती मत–मतान्तरों को असहनीय हो रही है; इसलिए वे इस शैशव काल अवस्था में चल रही संस्था को मिथ्याप्रचार और निंदा से समूल समाप्त करना चाहते है। प्रसिद्ध पटियाला अभियोग इसी विरोध का अंतिम परिणाम था, जिसमें अभियोग पक्ष के भाषण का निचोड़ आर्यसमाज के विरोधियों से मेल खाता था।

मैं जो कार्य कर रहा हूँ उसमें पटियाला अभियोग के विषय में विस्तार से जानकारी होगी, मिस्टर ग्रे महोदय के विख्यात भाषण की समुचित समीक्षा और भ्रम निवारण होगा। साथ में आर्यसमाज आंदोलन की विचारधारा, उसके संस्थापक स्वामी दयानन्द के विषय में जानकारी होगी। आर्यसमाज के सिद्धांतों की आलोचना की तार्किक समीक्षा भी लिखी जाएगी ताकि अध्ययन शील जनता के समक्ष आर्यसमाज के वास्तविक रूप को रखा जा सके। यह ग्रन्थ ८०० से १००० पृष्ठों का होगा। जो दिसंबर १९१० तक प्रकाशित होगा।

स्वामी जी के पत्र का उत्तर जिला पुलिस अधिकारी ने २४ जून, १९१० को निम्न प्रकार से दिया–

माननीय महोदय,

आपने अपनी प्रकाशित होने वाली पुस्तक की जानकारी देकर उचित कदम उठाया। मेरा विश्वास है कि ध र्मशाला की वायु आपको अवश्य शारीरिक लाभ देगी और आप शीघ्र ही अपने कार्य को संपन्न कर पाएंगे। वह कार्य निष्पक्षता और संयम से होगा और आप सभी आलोचकों को समुचित उत्तर देकर उनकी शंकाओं का समाधान करेंगे। मैंने पाया कि पुस्तक पटियाला अभियोग पर होगी जिसमें मिस्टर वारबुर्टोन (Mr. Warburton) और उनके कार्यों का उल्लेख होगा। मैं आपको दो विषयों की ओर ध्यान दिलाना चाहता हूँ। पहला तो यह कि मिस्टर वारबुर्टोन यूरोप निवासी नहीं हैं। वे एशिया महाद्वीप के निवासी हैं। दूसरा यह कि उनकी अपने प्रान्त में छवि एक सम्मानित और उत्कृष्ट पुलिस अधिकारी की हैं।

'वारबुर्टोन दा सुनदिया नाम चोर जवाहिरान सोग तमन'

आपके अनेक देशवासी मिस्टर वारबुर्टोन का अत्यधि क सम्मान करते हैं। मैंने अपने एक मुल्तान स्थित मित्र से आपके द्वारा हरिद्वार में किये गए कार्य की प्रशंसा सुनी है। आपकी गुरुकुल कालेज की योजना बहुत उत्तम है और मेरे विचार से प्रशंसनीय भी है। मुल्तान छोड़ने से पहले मैं गुरुकुल डेरा बद्दू गया था और मेरे पास उसकी प्रशंसा के अतिरिक्ति कुछ शब्द नहीं हैं। जहाँ तक पुलिस की छानबीन की बात है, मैं यह कहना चाहूँगा कि कुछ वर्ष पहले मैं जर्मनी के एक विशाल नगर में रहता था। मुझे वहाँ अपनी उपस्थिति की जानकारी पुलिस को देनी होती थी। ऐसे ही पेरिस में तीन वर्ष से कुछ अधिक रहते हुए भी पुलिस को अपने विषय में लिखित जानकारी देनी होती थी। भारत में व्यक्तिगत स्वतंत्रता यूरोप और अमेरिका की तुलना में बहुत अधिक प्राप्त है। मैंने भी आपको एक प्रबुद्ध नेता मानते हुए और आपके विचारों से प्रभावित होकर आपकी जानकारी लेनी चाही। जियो और जीने दो का श्रेष्ठ सिद्धांत है। आप एक सामाजिक और धार्मिक सुधारक हैं, जिन्हें मेरे जिले में कोई शिकायत का मौका अब नहीं मिलेगा। मैं आपको अपनी गतिविधियों की जानकारी देने के लिए धन्यवाद देता हूँ। हमें अपने कर्त्तव्य का निर्वहन करना होता है। हम किसी की प्रसिद्धि से प्रभावित न होकर कार्य करते हैं और न ही किसी के अधिकारों का अनावश्यक अतिक्रमण करना चाहते हैं। हम समाज के हित में सभी कार्य करते हैं, जो कभी कभी कुछ लोगों को कष्टप्रद लगते हैं।

आपके जैसे सुपठित व्यक्ति को सम्मान प्राप्त हो।

जिला पुलिस अधिकारी

महात्मा मुंशीराम जी ने २७ जून, १९१० को पुलिस अधिकारी को पत्र लिखा। महात्मा जी लिखते हैं–

मैं आपके उदार और नम्र प्रत्युत्तर के लिए धन्यवाद करता हूँ। मैं आपको ध्यान दिलाना चाहता हूँ कि मैं मिस्टर वारबुर्टोन से भली प्रकार से परिचित हूँ। मुझे उनसे वार्तालाप करने के लिए बहुत तैयारी करनी पड़ी थी। मैं यह समझता हूँ कि मैं उनकी खूबियों और कमियों, दोनों से परिचित हूँ। मैं सदा बिना किसी पक्षपात के संयम से उन जैसे व्यक्तियों की समालोचना करता हूँ। आशा करता हूँ, मैं अपनी इस मान्यता पर स्थिर रहूँगा। मैं गुरुकुल और मेरे विषय में आपकी द्वारा दी गई प्रतिक्रिया के लिए आभारी हूँ। मैं आपके द्वारा पत्र के अंत में दी गई मलामत के लिए भी आपको धन्यवाद देता हूँ। मैं यह भी स्वीकार करता हूँ कि मेरा एक पुलिस अधिकारी को उनकी जाँच में हस्तक्षेप करना मतिहीनता कहलाएगी। व्यक्तिगत रूप से पुलिस जाँच से मेरे लिए कोई असुविधा नहीं होती, मगर आर्यसमाज के स्थान और प्रतिष्ठा को देखते हुए एक कम महत्त्व के पुलिस अधिकारी की रिपोर्ट के आधार पर किसी भी प्रकार की विपत्ति को न्यौता नहीं देना चाहता। मेरा पत्र लिखने का केवल यही कारण है। मैं आशा करता हूँ, आप मेरे उद्देश्य को भली प्रकार से समझेंगे।

आपका विनीत, मुंशीराम जिज्ञासु

मुंशीराम जी ने पुलिस अधिकारी के साथ साथ लाहौर में डाक विभाग के मुख्याधिकारी को भी अपनी डाक से हो रही छेड़छाड़ को लेकर शिकायत दर्ज करवाई। स्वामी जी डाक अधिकारी को लिखते हैं–

मैं धर्मशाला में ९ अप्रैल, १९१० को बदलाव के उद्देश्य से आया था। मैंने पाया कि मैं जासूसों की निगरानी में हूँ। पहले १५ दिनों तक मेरी डाक से कोई छेड़छाड़ नहीं हुई थी, पर मैंने पाया कि मेरी डाक से छेड़छाड़ की जा रही है। जब मैं धर्मशाला आया तो एक हिन्दू अधिकारी कोतवाली

स्थित डाकघर का प्रभारी था, जिसे मेरे आगमन के कुछ काल बाद ही एक मुसलमान अधिकारी से बदल दिया गया। मैं उस समय चुप रहा, क्योंकि तब तक यह मेरे लिए कोई असुविधा का कारण नहीं था, मगर अब जब मुझसे चुप रहना मुश्किल हो गया, तब मैं आपसे संपर्क कर यह शंका दर्ज करवा रहा हूँ।

१- मैं आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का सदस्य हूँ। सभा के मंत्री डॉ० परमानन्द ने पत्र क्रमांक ७२२ दिनांक २७ जेठ (९ जून, १९१०) को मुझे लिखा कि मुझे बैठक का निमंत्रण पिछले दिन भेजा जा चुका है। मुझे उनका पत्र १२ जून को मिल गया पर बैठक का निमंत्रण अभी तक नहीं मिला।

२- २८ अप्रैल, १९१० को मैंने लंदन के अर्थव्यवस्था संस्थान से विवरण पत्रिका मंगवाई, क्योंकि एक युवक वहां प्रवेश का इच्छुक था। २७ मई,१९१० को सचिव ने मुझे लिखा कि आपको सभी सामग्री भेजी जा चुकी है। मुझे उनका पत्र १२ जून को प्राप्त हो गया, पर वह सामग्री मुझे अभी तक नहीं मिली। मैं विनती करता हूँ कि आप विभागीय जाँच कर यथोचित कार्यवाही करें।

आपका विनीत, मुंशीराम जिज्ञासु

अधिकारी ने २१ जून, १९१० को स्वामीजी को पत्र द्वारा बताया कि हम जाँच कर आपको उसकी सूचना देंगे।

२३ जून, १९१० को उक्त अधिकारी को स्वामीजी ने पत्र लिखा, जिसमें लिखा था-

मैं आपको संज्ञान लेने के लिए धन्यवाद देना चाहता हूँ। मैं आपको सूचित करना चाहता हूँ कि लंदन से निकली डाक मुझे १० दिन के पश्चात् प्राप्त हो गई है। पैकेट लंदन के जिस संस्थान से था उस पर Political science शब्द लिखा था। क्या इन्हीं शब्दों के कारण इस पैकेट को विभागीय जाँच के लिए रोका गया था! अथवा मैं लंदन से यह पता लगवाना चाहूंगा कि London School of Economics and Political Science जो लंदन के विश्वविद्यालय से मान्यता प्राप्त है, में भारतीयों को प्रवेश अयोग्यता के अंतर्गत आता है। मुझे अभी तक लाहौर से निकली डाक प्राप्त नहीं हुई है। मुझे जो डाक मिली है उस पर लंदन के डाकघर, धर्मशाला कैंट और कोतवाली बाजार तीन ही डाक विभाग की मोहर मुद्रित हैं। (स्पष्ट है कि स्वामीजी की डाक को जाँच के नाम पर रोका जा रहा था।-लेखक)

महात्मा मुंशीराम जी की निर्भीकता उनके गुरुकुल के छात्रों में भी झलकती थी। धर्मशाला का एक ऐसा ही प्रसंग हम यहाँ पर देना चाहेंगे। गुरुकुल के ब्रह्मचारी महात्मा जी और डॉ० सुखदेव के साथ धर्मशाला घूमने गए थे। वहाँ एक अंग्रेज अधिकारी ने उनके ऊपर ज्यादती करनी चाही। आत्मस्वाभिमान की रक्षा करते हुए उन्होंने उसे यथोचित उत्तर दिया। यह विस्मृत प्रसंग उस काल में अंग्रेजों द्वारा भारतीयों पर किये जा रहे अत्याचारों की एक छोटी से झांकी प्रस्तुत करता है। उस काल के आर्यों के अत्याचार के सामने निडरता से खड़े होने का प्रमाण भी देता है। महात्माजी का एक लेख इस विषय पर प्रकाशित हुआ। उसमें धर्मशाला के अंग्रेज अधिकारी को लिखा पत्र इस प्रकार से था-

माननीय श्रीमान,

मैं १५ विद्यार्थियों के साथ धर्मशाला आया था। कल मेरे चिकित्सक डॉ० सुखदेव और तीन छात्र हरिबोली में एक बेंच पर बैठे थे। तब एक काले घोड़े पर सवार अंग्रेज अधिकारी ने हिंदुस्तानी भाषा में उन्हें गालियां दीं। उस अधिकारी का नाम अफ० दि० कब्बालड (F D Cobbald) है और वह गोरखा राइफल्स का अधिकारी है। यह सारा वाकया मुझे डॉ० सुखदेव ने बताया जब मैं वापिस आया। ऐसा ही एक वाकया डल झील से वापिस लौटते हुए हुआ। तब अंग्रेज अधिकारी ने एक छात्र की छाती पर घोड़े से चोट भी मार दी। वह भी उन्हें सलाम करने के लिए बाधित कर रहा था। गुरुकुल के छात्रों का यह पहला अवसर है, जब उनका किसी अंग्रेज अधिकारी से पाला पड़ा है। अंग्रेज अधिकारियों का व्यवहार उनके मस्तिष्क पर अच्छा प्रभाव नहीं डालेगा। किंग जॉर्ज की निष्ठावान प्रजा होने के नाते मैं इस व्यवहार से बहुत शर्मिंदा महसूस कर रहा हूँ। मैं एक शांतिप्रिय धार्मिक व्यक्ति हूँ जो सामान्य कष्टों पर कभी ध्यान तक नहीं देता, पर धर्मशाला में एक अधिकारी होने के नाते आपकी यह जिम्मेदारी बनती है कि आप अंग्रेज शासन की गरिमा की रक्षा करें। मैं आपसे आग्रह करता हूँ कि आप उक्त अंग्रेज अधिकारी के खेदजनक व्यवहार के लिए क्षमा दिलवायें, जो मेरे विचार से गलतफहमी के कारण हुआ। मैं आपको बार बार आग्रह करने के लिए क्षमा चाहूंगा।

आपका विनीत, मुंशीराम जिज्ञासु

स्वामी जी ने गोरखा राइफल के कमांडिंग अधिकारी को भी ऐसा ही पत्र लिखा। उक्त अधिकारी से स्वामीजी का पत्र व्यवहार हुआ। स्वामीजी को एक छात्र के बीमार होने के कारण वापिस गुरुकुल आना पड़ा। उन्होंने गुरुकुल से उक्त अधिकारी को पत्र लिखकर धर्मशाला छोड़ने की सूचना दी। उक्त अधिकारी ने अंत में क्या उत्तर दिया, यह अभी ज्ञात नहीं है। मुंशीराम जी ने पूरे प्रकरण को वैदिक मैगजीन में अंग्रेजी में (The Gulf between the Rulers and the Ruled) शीर्षक से प्रकाशित किया। स्वामीजी का यह लेख इतिहास के विस्मृत हो चुके पृष्ठ हैं, जो उनके निर्भीक व्यक्तित्व की झलक दिखाते हैं। ❑❑❑

मनुस्मृति में नारी के अधिकारों का प्रश्न-५ अन्तिम कड़ी

दायभाग और मनु का विधान

❑महीपाल आर्य पूनिया, (प्राध्यापक)
ग्रा० पो० मतलौडा, जिला हिसार (9416177041)

यथैवात्मा तथा पुत्रः पुत्रेण दुहिता समा।
तस्यामात्मनि तिष्ठ्यन्तां कथमन्यो धनं हरेत्।।९/१३०

अर्थात् जैसे स्वयं वैसा पुत्र। पुत्र के बराबर पुत्री। उसके रहते हुए अन्य कौन धन ले सकता है? यह नियम विशेष अवस्था का है। साधारणतया तो कोई पुरुष अपनी पत्नी के घर रहना नहीं चाहता। विशेष अवस्था में ही यह संभव है; इसलिए यह नियम बना दिया। इससे स्त्री के अधिकार को छीना नहीं गया अपितु उसके लिए एक व्यवस्था बना दी, जिससे वंशीय जायदाद की स्थिरता में बाधा न पड़ सके।

इतना ही नहीं, मनुस्मृति में जायज और नाजायज दोनों प्रकार की संतान के अधिकारों की व्यवस्था है, क्योंकि मानवीय समाज में अच्छे बुरे सभी प्रकार के व्यक्ति हो सकते हैं। सभी धर्मात्मा हों तो राज नियम या राजदंड की कुछ भी आवश्यकता न हो। परंतु ऐसा नहीं है। जहाँ लोग अन्य नियमों का उल्लंघन कर सकते हैं, वहीं विवाह संबंधी नियम भी तोड़ सकते हैं। इसमें नाजायज संतान भी उत्पन्न हो सकती है। अस्तु इस नाजायज संतान को न तो भूखा ही मरने देना चाहिए, न उसको जायज संतान के सर्वथा बराबर समझना चाहिए, जिससे लोग इन नियमों के उल्लंघन को प्रोत्साहित न हों। इसलिए औरस पुत्र, पुत्रिका के पुत्र तथा अन्य कई प्रकार के पुत्रों की तारतम्यात्मक तुलना दी गई है।

बहुधा कहा जाता है कि स्मृतियों के अनुसार स्त्री का कोई अधिकार ही नहीं रखा, परंतु ऐसी बात नहीं है। मनुस्मृति का दायभाग के संबंध में सर्वप्रथम श्लोक यह है-

ऊर्ध्वं पितुश्च मातुश्च समेत्य भ्रातरः समम्।।
भजेरन् पैतृकं रिक्थमनीशास्ते हि जीवतोः।।९/१०४

अर्थात पिता और माता दोनों के मरने पर भाई पैतृक जायदाद को बराबर-बराबर बांट लें। उनके जीवन में वे पुत्र कुछ अधिकार नहीं रखते। यहां 'मातुश्च' शब्द से प्रकट होता है कि माता के जीवन काल में माता ही अधिकारी है, पुत्र नहीं। 'अनीशास्ते हि जीवतोः' में 'जीवतोः' द्विवचन में आया है, अर्थात् जब तक माता जीवित है तब तक लड़कों को अधिकार नहीं है। यदि माता को वंचित रखना होता तो द्विवचन का प्रयोग व्यर्थ था। और देखिए

अनपत्यस्य पुत्रस्य माता दायमवाप्नुयात्।
मातर्यपि च वृत्तायां पितुर्माता हरेद्धनम्।।९/२१७

अर्थात् यदि कोई पुत्र रहित मर जाए तो उसकी जायदाद माता ले लेवे। माता न हो तो पिता की माता अर्थात् दादी लेवे। मनुस्मृति के टीकाकार कुल्लूक भट्ट कहते हैं कि- मातरि मृतायां पत्नीपितृभ्रातृ -भ्रातृजाभावे पितुर्माता धनं गृहणीयात्।।' अर्थात् माता मर जाए और स्त्री (अर्थात् पत्नी) पिता, भाई या भतीजा न हो तो दादी को धन मिले। पुरुष के मर जाने पर स्त्री को दायभाग मिलने का विधान अन्य नवीन समृतियों में भी पाया जाता है। जैसे बृहस्पति स्मृति का श्लोक देखिए-

यस्य नोपरता भार्या देहार्धं तस्य जीवति।
जीवत्यर्धशरीरेऽर्थो कथमन्यः समाप्नुयात्।। २५/४७

अर्थात् जिसकी स्त्री जीवित है, उसका आधा शरीर जीवित है। आधे शरीर के जीते हुए अन्य कौन दायभाग प्राप्त कर सकता है। क्योंकि शतपथ ब्राह्मण में लिखा है-

अर्धो ह वा एष आत्मनो यज् जाया। ५/२/१/१०

अर्थात् यह जो पत्नी है वह पुरुष का आधा भाग है। प्रतीत होता है कि पत्नी को दायभाग से वंचित करने की प्रथा पीछे से चली। जो बात मूल में न थी वह भाष्यकारों ने अपनी कल्पना से उत्पन्न कर दी। कुल्लूक भट्ट ने मनुस्मृति ९/१८७ पर भाष्य करते हुए एक श्लोक दिया है-

पत्नीनामंशभागित्वं बृहस्पत्यादि सम्मतम्।
मेघातिथिर्निराकुर्वनन्न प्रीणाति सतां मनः।। ९/१८७

अर्थात् बृहस्पति आदि के मतानुसार पत्नियों को दायभाग मिलना चाहिए था। मेघातिथि ने इसका खंडन किया है। यह बात साधु पुरुषों के मन को नहीं भाती।

लड़की को लड़के के बराबर मानने का विधान हम ऊपर दे चुके हैं। मनुस्मृति कहती है-

यथैवात्मा तथा पुत्रः पुत्रेण दुहिता समा।
तस्यामात्मनि तिष्ठ्यन्तां कथमन्यो धनं हरेत्।। ९/१३०

अर्थात् जैसा आत्मा (स्वयं) वैसा लड़का। लड़के के समान ही लड़की। जब लड़की विद्यमान है तो अन्य कौन धन ले सकता है। मनु जी पुनः लिखते हैं-

मातुस्तु यौतकं यत् स्यात् कुमारी भाग एव सः।

दौहित्र एव च हरेद् पुत्रस्याखिलं धनम्।। ९/१३१

अर्थात् माता का जो भाग है, वह कुमारी का ही भाग है। जो पुत्र रहित मर जाए उसका सब धन धेवता (लड़की) का पुत्र लेवे।

पौत्रदौहित्रयोर्लोके न विशेषोऽस्ति धर्मतः।
तयोर्हि मातापितरौ संभूतौ तस्य देहतः।। ९/१३३

अर्थात् लोक में पुत्र और धेवते में कुछ भेद नहीं है, क्योंकि उन दोनों के माता–पिता उसी एक देह से जन्मे हैं।

मनुस्मृति के उपर्युक्त ९/१३१ श्लोक में जो कुमारी शब्द आया है, वह हमारी राय में साधारणतया लड़की का वाचक है, परंतु कुछ भाष्यकारों ने इसका अर्थ 'अविवाहिता कन्या' लिया है। आगे देखिए–

जनन्यां संस्थितायां तु समं सर्वे सहोदराः।
भजेरन् मातृकं रिक्थं भगिन्यश्च सनाभयः।।९/१९२

मनु जी स्पष्ट लिख रहे हैं कि माता के मरने पर सब भाई और सहोदरा (सगी) बहनें माता की जायदाद को बांट लें। इतना ही नहीं, धेवतियों का भी भाग है। आगे लिखते हैं कि–

यास्तासां स्युर्दुहितरस्तासामपि यथार्हतः।
मातामहि या धनात् किञ्चित् प्रदेयं प्रीतिपूर्वकम्।।९/१९३

अर्थात् उन लड़कियों की यदि लड़कियाँ हों तो उनको भी नानी के धन में से कुछ प्रीतिपूर्वक देना चाहिए।

स्त्री धन के विषय में लोगों का विचार है कि यह एक अकिञ्चित् वस्तु थी, परंतु मनुस्मृति के देखने, पढ़ने से पता चलता है कि मनुजी ने स्त्री धन को विशेषता दी है। यह धन पिता या भाइयों की इच्छा पर निर्भर नहीं रखा। मनुस्मृति के ९/११८ श्लोक में वे लिखते हैं कि सभी भाई अपने अपने अंश का चौथाई भाग बहनों को दें। न देना चाहें तो पतित समझे जावें।

इससे प्रतीत होता है कि राजनियम से भी कड़ा समाज नियम दिया गया था, जिससे स्त्रियां भागशून्य न रहने पावें। पीछे से लोगों ने खींचातानी कर के कुछ का कुछ अर्थ निकाल लिया। उदाहरण के तौर पर कुछ लोग कहते हैं कि इससे केवल विवाह मात्र का व्यय अभिप्रेत है; परंतु यह भी पीछे की कल्पना है, जब भाइयों ने बहनों को धन देने से इनकार किया होगा।

इसके अतिरिक्त मनु जी ने यह भी व्यवस्था इंगित की है कि माता पिता की मृत्यु के पश्चात् दायभाग के बंटवारे के कई विकल्प विहित हैं। सभी पुत्र मिलकर जिस प्रकार सहमत हों, उसी विधि को अपना सकते हैं। यह भी लिखा है कि नपुंसक, जन्म से अंधे, बहरे, पागल, वज्र मूर्ख और गूंगे, किसी इन्द्रिय से पूर्ण विकलांग होने के कारण असमर्थ पुत्र; ये धन के भागी नहीं होते। अन्य भाई इनके धन का संरक्षण करते हुए इनका पूर्ण पालन पोषण करें। हाँ, यदि ये विवाह कर लें तो इनके पुत्र अपने पिता के उस धन के अधिकारी हैं। (मनु० २०१–२०३ श्लोक)

जुआ, चोरी, डाका आदि दुष्कर्मों में प्रवृत्त को दायभाग से वंचित किए जाने की व्यवस्था भी मनु महाराज करते हैं। (९/२१४)

दायभाग के संबंध में एक बात ने बड़ा झमेला डाला है। प्रायः यह समझा जाता है कि दायभाग के नियमों का आधार मृतक श्राद्ध और तर्पण पर है। अर्थात् जिसका अपने मृत पिता को पिंड देने का कर्तव्य है, वही उसकी जायदाद का भी अधिकारी है। डॉक्टर गंगानाथ झा ने हिंदू लॉ इन इट्स सोर्स वाल्यूम वन की भूमिका में यही सम्मति दी है। वे लिखते हैं कि– 'जहाँ तक मैं हिंदू कानून को समझ सका हूँ, दायभाग पाने वालों का क्रम बिल्कुल श्राद्ध करने के उत्तरदायित्व के क्रम से है।

आजकल हिंदुओं में मुख्यतः दो विधान दायभाग के संबंध में पाए जाते हैं। एक को मिताक्षरा विधान कहा जाता है, दूसरे को दायभाग विधान। वस्तुतः मिताक्षरा याज्ञवलक्य स्मृति पर एक भाष्य है, जो विज्ञानेश्वर का बनाया हुआ है। दायभाग एक और ग्रंथ है जिसको जीमूतवाहन ने बनाया है। बंगाल में दायभाग के अनुसार ही काम होता है और अन्य उत्तरी भारत में मिताक्षरा के अनुसार। कानूनवेत्ता लोगों की तथा हाई कोर्ट आदि न्यायालयों की व्यवस्था से पता चलता है कि मिताक्षरा में दायभाग के नियमों का मूल आधार खून का संबंध है और दायभाग में श्राद्ध का। दिनसा फर्दन जी मुल्ला ने अपनी पुस्तक (प्रिंसिपल्स ऑफ हिन्दु लॉ) में दो मुकदमों के उदाहरण दिये हैं। एक लल्लूभाई और काशीबाई के बीच १८८० ई० की मुंबई की नजीर है– जिसमें हाई कोर्ट की राय है कि – By the law of the Mitakshara, the right to inherit is to be determined by family relationship.

अर्थात् मिताक्षरा विधान के अनुसार दायभाग का निश्चय परिवार के रिश्ते के अनुसार होता है। दूसरी, १८७२ की टैगोर बीच जो मुकदमा हुआ, उसकी बंगाल की नजीर है कि (हिंदी सरलार्थ) बंगाल विधान के अनुसार वही दायभाग के अधिकारी समझे जाते हैं, जो मृत पुरुष की आत्मा के लिए सद्गति प्राप्त कराने वाले धार्मिक कृत्य (तात्पर्य श्राद्ध तर्पण आदि से है) कर सकते हैं। परंतु १९१५ की इलाहाबाद हाईकोर्ट की बुध सिंह लल्लू सिंह के मुकदमे के फैसले की नजीर है, जिसमें जुडिशल कमेटी ने यह

(शेष पृष्ठ ३३ पर)

वीर गाथा

स्वतंत्र भारत के परतंत्र इतिहास का एक विलुप्त अध्याय

मरुवीर गोगा बापा चौहान

❒डॉ० विवेक आर्य

किसी ने कहा– 'बापा, शत्रु असंख्य है। हम तो गिने चुने ही हैं।' गोगा बापा गरज उठे– 'देश धर्म की रक्षा का दायित्व संख्या के हिसाब से तय होगा क्या? गोगा बापा धर्म के लिए जिया है, धर्म के लिए ही मरेगा।'

भारत देश के महान इतिहास में लाखों ऐसे वीर हुए हैं जिन्होंने देश, धर्म और जाति की सेवा में अपने प्राण न्योछावर कर दिए। खेद है कि स्वतंत्र भारत का इतिहास आज भी परतंत्र है क्योंकि उसमें गौरी और गजनी के आक्रमण के विषय में तो बताया जाता है, मगर उसका प्रतिरोध करने वाले महान वीरों पर मौन धारण कर लिया जाता है। ऐसे ही महान वीरों में देश धर्म की रक्षार्थ बलिदान हुए वीर गोगा बापा एवं उनका परिवार।

अरब देश से उठी मुहम्मद गजनी नामक इस्लामिक आंधी एक हाथ में तलवार तो दूसरे हाथ में कुरान लेकर सोने की चिड़िया भारत की अकूत धन-सम्पदा को लूटने के लिए भारत पर चढ़ आई। ईसा की दसवीं सदी तक गांधार और बलूचिस्तान को हड़प कर सिन्ध और पंजाब को पद दलित कर यह आँधी राजपूताने के रेगिस्तान पर घुमड़ने लगी थी। गजनी का सुल्तान महमूद गजनवी भारत के सीमावर्ती छोटे-छोटे राज्यों को लूट कर करोड़ों के हीरे, जवाहरात, सोना-चांदी गजनी ले जा चुका था। अब उसकी कुदृष्टि सोमनाथ मंदिर पर पड़ी। उस समय गुजरात के प्रभास पाटण में स्थित सोमनाथ महादेव मन्दिर के ऐश्वर्य और वैभव का डंका भारत में ही नहीं, बल्कि पूरी दुनिया में बज रहा था। सोमनाथ की अकूत धन संपदा को लूटने और भव्य देव मन्दिर को धराशायी करने के लिए यह विधर्मी आक्रान्ता पंजाब से होते हुए राजपूताने के उत्तर पश्चिमी रेगिस्तान में पहुंचा।

रेगिस्तान के प्रवेश द्वार पर भटनेर (गोगागढ़) का दुर्ग चौहान वंशीय धर्मवीर गोगा बापा द्वारा बनाया गया था। यहाँ नब्बे वर्षीय वृद्ध वीर गोगा बापा अपने २१ पुत्र ६४ पौत्र और १२५ प्रपौत्र के साथ धर्म की रक्षा के लिए रात दिन तत्पर और कटिबद्ध रहते थे। महमूद गजनवी ने छल-बल से गोगा बापा को वश में करने के लिए सिपहसालार मसूद को तिलक हज्जाम के साथ भटनेर भेजा। दूत मसूद और तिलक हज्जाम ने गोगा बापा को प्रणाम कर हीरों से भरा थाल रख कर सिर झुका कर अर्ज किया– 'सुल्तान आपकी वीरता व बहादुरी के कायल हैं, इसलिए आपकी तरफ दोस्ती का हाथ बढ़ा कर आपसे मदद मांग रहे हैं। उनकी दोस्ती का यह नजराना कबूल कर आप उन्हें सही सलामत गुजरात के मंदिर तक जाने का रास्ता दें।'

यह सुनते ही गोगा बापा की बिजली सी कड़कती तलवार म्यान से निकली और अपने आसन से उठते नब्बे वर्षीय वृद्धवीर बोले– ' तो तुम्हारा अमीर इन पत्थर के टुकडों से मुझे खरीदकर मंदिर तोड़ने के लिए मार्ग मांगता है। जा कह दे उस लुटेरे से कि जब तक गोगा बापा की काया में रक्त की एक बूँद भी बाकी है तब तक उसकी फौज तो क्या परिंदा भी पर नहीं मार सकता।' इसके साथ ही उन्होंने हीरों से भरे थाल को ठोकर मार कर फेंक दिया। मसूद और तिलक हज्जाम ने जान बचाकर भागने में ही भलाई समझी।

बात बनती न देख सुल्तान ने समंदर सी सेना को कूच करने का आदेश दिया। बवंडर की तरह उमड़ती फौज में एक लाख पैदल और तीस हजार घुडसवार थे। हजारों लोग सेवक के रूप में साथ थे तो रेगिस्तान में पानी की कमी को देखते हुए तीस हजार ऊँट-ऊँटनियों पर पानी भरकर रखा गया था। इधर आठ सौ वीर राजपूत और तीन सौ अन्य लोग ऊँट के मुँह में जीरे के बराबर थे। इसके बावजूद गोगा बापा के अद्भुत साहस और बलिदानी तेवरों को देखते हुए सुल्तान ने उन्हें बहलाने-फुसलाने को दो बार दूत भेजा। पर गोगा बापा टस से मस नहीं हुए। अंत में हार मान कर सुल्तान ने बिना युद्ध किये ही बगल से खिसकने में ही अपनी भलाई समझी।

सुलतान को बिना भिड़े ही भागता देख गोगा बापा भड़क उठे– 'एक भी राजपूत के जीवित रहते देश का दुश्मन अंदर आ जाये तो उसके जीवन को धिक्कार है। वीरो! दुर्ग के द्वार खोलकर दुश्मन पर टूट पड़ो।

किसी ने कहा- 'बापा, शत्रु असंख्य है। हम तो गिने चुने ही हैं।' गोगा बापा गरज उठे- 'देश धर्म की रक्षा का दायित्व संख्या के हिसाब से तय होगा क्या? गोगा धर्म के लिए जिया है, धर्म के लिए ही मरेगा।'

केसरिया बाना सजाकर हर-हर महादेव का घोष करते राजपूत वीर यवन सैन्य पर वज्र की तरह टूट पड़े। एक-एक राजपूत वीर दस-दस दुश्मनों को यमलोक भेजकर वीरगति को प्राप्त हुआ। गोपा बापा बन्धु बांधवों सहित देश धर्म की बलिवेदी पर बलिदान हो गए। बच गए तो बापा के मात्र एक पुत्र सज्जन और एक पौत्र सामन्त, जिन्हें बापा ने सुल्तान के आक्रमण की पूर्व सूचना के लिए गुजरात भेजा था। धर्म रक्षा के लिए गढ़ के वीरों के बलिदान होते ही दुर्ग पर वीर राजपूत वीरांगनाएँ सुहागिन वेष सजाकर और मंगल गान करते हुए जलती चिता पर चढ़कर बलिदान हो गई।

सामंत सिंह और सज्जन सिंह रास्ता बताने वाले दूत बनकर गजनी की सेना में शामिल हो गए। उन्होंने शत्रु सेना को ऐसा घुमाया कि राजस्थान की तपती रेत, गर्मी, पानी की कमी के चलते, रात में सांपों के काटने से गजनी के हजारों सैनिक और पशु काल के ग्रास बन गए। ये दोनों वीर राजपूत युवक भी मरुभूमि में वीरगति को प्राप्त हो गए, मगर तब तक गजनी की आधी सेना यमलोक पहुंच चुकी थी।

धर्म रक्षक गोगा बापा का बंधु-बांधवों सहित वह बलिदान और सतीत्व की रक्षा के लिए सतियों का वह जौहर 'यावच्चन्द्र दिवाकरौ' (जब तक सूरज चाँद रहेगा) इतिहास में अमर हो गया। अनेक शताब्दियाँ बीतने पर भी गोगा बापा की कीर्ति पताका गगन में उनकी यशोगाथा गा रही है। धन्य है गोगा वीर चौहान, धन्य है धर्मवीर गोगा बापा का बलिदान!!

विद्यार्थी दयानन्द

सच्चा गुरु और सच्चा शिष्य

♦जब दयानन्द ने गुरु विरजानन्द की सेवा में उपस्थित हो, प्रणाम कर पढ़ने की इच्छा प्रकट की तो उन्होंने कहा- 'आज तक जो तुमने मनुष्यप्रणीत ग्रंथों में पढ़ा है, वह सब भूल जाओ, क्योंकि जब तक मनुष्यप्रणीत ग्रंथों का प्रभाव रहेगा, आर्ष ग्रंथों का प्रकाश तुम्हारे चित्त में प्रवेश न कर सकेगा। और यदि कोई मनुष्यप्रणीत ग्रंथ तुम्हारे पास हो तो उसे यमुना के प्रवाह में फेंक आओ।

♦एक दिन दयानन्द से दण्डी जी अप्रसन्न हो गए और उनको लाठी मारी जिससे दण्डीजी का हाथ दर्द करने लगा। दयानन्द ने अत्यंत विनम्रता के साथ उन्हें कहा कि महाराज आप मुझे न मारा करें। मेरा शरीर वज्र के समान कठोर है। उस पर प्रहार करने से आपके कोमल हाथों को दुःख होगा। इस चोट का चिह्न दयानन्द के शरीर पर अन्त समय तक रहा जिसे देखकर वे दण्डी जी के उपकारों का स्मरण किया करते थे।

♦एक दिन दण्डीजी ने अप्रसन्न होकर दयानन्द को सोटा मारा। नैनसुख जड़िये ने दण्डीजी से कहा कि दयानन्द हमारे समान गृहस्थ नहीं हैं, वह संन्यासी है, उसे नहीं मारना चाहिए। दण्डीजी ने कहा कि ठीक है, आगे से प्रतिष्ठा से पढाएँगे। पाठशाला के बाहर आकर दयानन्द नैनसुख से बोले कि तुमने मेरी सिफारिश क्यों की? दण्डीजी तो सुधार के लिए ही मारते हैं, द्वेष से नहीं, जैसे कुम्हार मिट्टी को पीट पीट कर घड़ा बनाता है। यह तो उनकी कृपा है। तुमने बुरा किया जो मारने से निषेध कर दिया।

♦दयानन्द की धारणा शक्ति अलौकिक थी। वे पाठ को एक दो बार सुनकर ही स्मरण कर लेते थे। एक बार उन्हें अष्टाध यायी की एक प्रयोगसिद्धि विस्मृत हो गई। उन्होंने दण्डीजी से पूछा। दण्डीजी ने कहा कि हम बार-बार बताने के लिए नहीं हैं। जाओ, स्मरण करके आओ। दयानन्द ने बहुत प्रयत्न किया किन्तु सफल न हो सके। फिर गुरुदेव के पास गए। कहा कि महाराज मैं तो बहुत प्रयत्न कर चुका परन्तु वह प्रयोग याद नहीं आता। दण्डीजी अपने हठ के पक्के थे। उन्होंने कोई ध्यान न दिया, बल्कि डाँटकर बोले- जब तक पहला पाठ याद नहीं करोगे, दूसरा पाठ न होगा। यदि तुम्हें वह प्रयोग याद नहीं आता तो यमुना में भले ही डूब मरना परन्तु मेरे पास न आना। दयानन्द को गुरुजी के वचन तीर के समान चुभे। उन्होंने दृढ़ निश्चय कर लिया कि या तो पाठ स्मरण करूँगा, नहीं तो यमुना में डूबकर प्राणान्त कर लूंगा। यह संकल्प करके वे विश्राम घाट के समीप सीताघाट के शिखर पर चढ़कर समाधि में लीन हो गए। समाधि अवस्था में उन्हें वह पाठ स्मरण हो आया और वह विपत्ति दूर हो गई।

♦शिष्यों से कोई दक्षिणा ग्रहण करना या किसी अन्य प्रकार से अर्थग्रहण करना विरजानन्द के संकल्प के विरुद्ध था। वे अपने शिष्यों से कोई दक्षिणा नहीं लिया करते थे। दयानन्द से तो वे क्या दक्षिणा लेते। वे तो संन्यासी थे। फूटी कौड़ी तक उनके पास नहीं थी। जब दयानन्द गुरु के पास विदा होने को गए तो गुरुदेव ने प्रेम के साथ कहा- 'सौम्य! मैं तुमसे किसी प्रकार के धन की दक्षिणा नहीं चाहता हूँ, मैं तुमसे तुम्हारे जीवन की दक्षिणा चाहता हूँ। तुम प्रतिज्ञा करो कि जितने दिन जीवित रहोगे उतने दिन आर्यावर्त्त में आर्षग्रंथों की महिमा स्थापित करोगे, अनार्ष ग्रंथों का खण्डन करोगे और भारत में वैदिक धर्म की स्थापना में अपने प्राण तक अर्पित कर दोगे।' दयानन्द ने इसके उत्तर में केवल एक शब्द कहा- 'तथास्तु।' यह कहकर गुरुदेव के चरणों में प्रणत हो गए और मथुरा से प्रस्थान कर दिया।

बुरी किस्मत नहीं

❐श्री ओम बोरडे, BSc. 1
शिवाजी सायंस कालेज, नागपुर

चिंतन में होश खोकर
समझदारी में जोश खोकर
चंचलता भंग करके
एकाग्र मन करके
अगर फिर भी कुछ हासिल न हो
तो वह तेरी बुरी किस्मत नहीं, वह तो तेरा संघर्ष है।
समझ लेना कि बीता कल बीत गया आ रहा नव वर्ष है।

विनम्रता को अपनाकर
अक्खड़ता को भुलाकर
अशिष्टता मिटा करके
मधुरता को ला करके
अगर फिर भी तुझे कटाक्ष सुनने को मिलें
तो वह तेरी बुरी किस्मत नहीं, यह तो स्वाभाविक संसार है।
यह समझले कि तुझे ऊँचाई मिलने का संकेत व आसार है।

मन के छल कपट से निपट कर
स्वयं ही अच्छाइयों से लिपट कर
अंधकार में रोशनी करके
बुराई का संहार करके
अगर फिर भी तुझे कठिनाईयों को सहना पड़े
तो वह तेरी बुरी किस्मत नहीं, वह तेरा प्रायश्चित है।
यह समझ लेना हर हाल में कि जीत तेरी निश्चित है।।

महानता की नींव प्रस्तुति : प्रतिष्ठा

महाराष्ट्र के एक गांव में प्राथमिक स्कूल में अध्यापक बच्चों को पढ़ा रहे थे। अचानक उन्होंने प्रश्न किया यदि तुम्हें रास्ते में एक हीरा मिल जाये तो तुम उसका क्या करोगे?

'मैं इसे बेचकर कार खरीदूंगा।' एक बालक ने कहा। दूसरे ने कहा–'मैं इसे बेचकर धनवान बनूँगा।' तीसरे ने कहा–'मैं इसे बेचकर देश-विदेश की यात्रा करूँगा।' चौथे बालक ने कहा कि मैं उस हीरे के मालिक का पता लगाकर लौटा दूंगा। अध्यापक ने फिर पूछा–'खूब पता लगाने पर भी मालिक न मिला तो?' इस पर बालक ने कहा कि तब मैं हीरे को बेचकर सारा पैसा देश की सेवा में लगा दूंगा। शिक्षक गद्‌गद् हो गये और बोले–'शाबाश, तुम बड़े होकर बहुत बड़े आदमी बनोगे।'

शिक्षक का वचन सत्य सिद्ध हुआ। यही बालक गोपाल कृष्ण गोखले के नाम से प्रसिद्ध महापुरुष बना। सच है महानता की नींव बचपन में ही तैयार हो जाती है।

लघुकथा

आखिर क्यों जरूरी है बेटियाँ

'तुमसे तो बात करना ही बेकार है। सुबह सुबह दिमाग खराब कर देती हो।'

मैं अपनी पौरुषमय विद्वता का स्प्रे अपनी बीवी पर करके बाहर बालकोनी में आकर खड़ा हो गया। गुस्से से तेज चलती साँसें वातावरण में पसरी धुन्ध में और इजाफा कर रही थीं। तभी मेरे लोंग कोट का एक सिरा किनारे से पकड़ कर किसी ने खींचा और एक सहमी हुई तुतलाती आवाज आई, 'पापा, मैं आपको एक मीठा (किस्सी) दूंगी, अगर आप मेरी एक बात मानोगे तो।' बिटिया की झेंप को मैं भांपने का प्रयास करने लगा। मैं घुटनों के बल बैठ कर एकदम गीत का चेहरा अपने हाथों में लेकर बोला, 'हाँ, बता, बेटा।' गीत की छोटी सी मासूम शर्त उसके निश्छल कोमल होंठों से निकली– 'आप मम्मी से सॉरी बोल दो, वे रो रही हैं।'

मेरे कानों में अनायास ही गीत की कुछ बातें जो वह अक्सर बोला करती थी, धमाचौकड़ी करने लगीं– 'पापा, आप मेरा मीठा ना लिया कलो, आपकी ढाढ़ी चुभती है, मुझे दर्द होता है फिर।'

मेरी आँखें सजल हो उठीं– यह सोचकर मैं बिटिया को कैसे कैसे प्रलोभन देता था कि बेटा, एक मीठा दे दे फिर मैं तुझे बार्बी डॉल दिलाऊंगा, पिग्गी बैंक दिलाऊंगा– पर प्रिंसेस हमेशा इतराकर कर एक शब्द कहती थी– नो।

और आज वो खुद----!

उफ्फ! ये बेटियाँ, क्या माँ के पेट से ही सीख कर आती हैं रिश्तों के लिए समर्पण करना। आज एक नन्हें समर्पण ने मेरे अहंकार के तख्ते-ताऊस को हिला कर रख दिया। –डॉ० विकास 'यशकीर्ति' भिवानी

दर्शन

वेद, यज्ञ और योग

वैदिक संस्कृति के तीन आधारभूत स्तम्भ

ईश्वरसिंह आर्य प्र० अ०, मस्तापुर, रेवाड़ी-१२३४०१

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने वेद का पढ़ना-पढ़ाना, सुनना-सुनाना प्रत्येक आर्य का परम धर्म बतलाया है। वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद शब्द जिस विद् धातु से बना है उसके चार अर्थ हैं- (१) ज्ञान (२) विचार (३) सत्ता (४) लाभ।

वेद दुनिया का प्राचीनतम ग्रंथ है। हमारे पूर्वजों ने वेद के माध्यम से सब सत्य विद्याओं को जाना और सारी दुनिया को इसका ज्ञान कराया। आज हमने वेदों का अध्ययन करना छोड़ दिया है। बहुत से लोग तो वेदों को ईश्वरकृत मानने पर शंका उत्पन्न किया करते हैं। मुझे किसी विद्वान् द्वारा लिखित एक दृष्टांत बहुत अच्छा लगा कि मानवीय सृष्टि और परमपिता परमात्मा की सृष्टि में एक बड़ा अंतर हुआ करता है। मानव को जिस जिस चीज की आवश्यकता होती है वह उस उस वस्तु का आविष्कार कर लिया करता है। परन्तु मानव अल्पज्ञ है, उसके आविष्कारों में कमियाँ होने की संभावना बनी रहती है, अतः वह संशोधन, परिवर्तन, परिवर्द्धन करता रहता है। जिस प्रकार मानव ने सर्वप्रथम लम्बी दूरियाँ तय करने के लिए पहिये का आविष्कार किया। उसमें परिवर्द्धन कर बस, रेलगाड़ी, वायुयान का निर्माण कर लिया। आज भी नए-नए आविष्कारों में अहर्निश रत है। लेकिन परमपिता की सृष्टि में इसका उलटा है। परमपिता परमात्मा सर्वज्ञ है, पूर्ण है। उसके आविष्कार भी पूर्ण हैं। वह मानव के कल्याणार्थ उन समस्त वस्तुओं को पहले निर्मित कर देता है, जिसकी मानव को आवश्यकता होती है। जैसे परमात्मा ने धरती पहले बनाई, प्राणी जगत् का निर्माण बाद में किया। धरती न होती तो प्राणी जगत् रहता कहाँ? प्राणी जगत् के लिए वायु, जल की भी परम आवश्यकता होती है, अतः उसने वायु व जल का निर्माण भी प्राणी जगत् से पूर्व किया। सूर्य पहले था, प्राणियों की आँख बाद में बनाई। सूर्य न होता तो आँख का क्या औचित्य था? इसी नियमानुसार परमपिता परमात्मा ने मानव जगत् के कल्याणार्थ वेदज्ञान भी सृष्टि के आरम्भ में दिया। ज्ञान के अविर्भाव के बिना मनुष्य संसार के किसी भी पदार्थ का लाभ प्राप्त नहीं कर सकता। जैसे आँख के लिए सूर्य दिया वैसे बुद्धि रूपी आँख भी ज्ञान रूपी सूर्य की माँग रखती है। सो प्रभु ने सृष्टि के प्रारम्भ में ही मानव कल्याणार्थ वेदज्ञान प्रदान किया। ऐसा ज्ञान जो समस्त सत्यविद्याओं से ओत प्रोत है।

कुछ लोग ईश्वर साक्षात्कार पर निरर्थक बहस किया करते हैं। वे लोग यम-नियम की प्रथम सीढ़ी की भी अनुपालना नही करते, चाहते हैं ईश्वर का साक्षात्कार!

• • • • • • • • •

अब रही वेद ज्ञान को पढ़ने-पढ़ाने सम्बन्धी बात। जब हमारे आप्त पुरुष वेद का पढ़ना-पढ़ाना, सुनना-सुनाना परम धर्म बतलाते हैं, तो हमारा परम दायित्व बनता है कि हम वेदों का अध्ययन करें। उनके द्वारा बताए गए मार्ग पर चलें। वेद ज्ञान जीवन में भर लें। जीवन त्याग तपोमय कर लें। आर्ष ग्रंथों का व वेदों का अध्ययन करना ऐसा ही है जैसे समुद्र में गोते लगाना और मोती प्राप्त करना।

यज्ञ : विश्व का सर्वश्रेष्ठ कर्म यज्ञ है। यज्ञ के व्यापक अर्थो में जीवन की सुफलता और सामञ्जस्य के सारे सूत्र आ जाते हैं। यज्ञ से पर्यावरण की शुद्धि होती है। शुद्ध पर्यावरण वर्षा लाने में सहायक सिद्ध होता है। समय पर शुद्ध वर्षा होने से शुद्ध अन्न उत्पन्न होता है। अन्न ही वीर्य है, अन्न ही बल है, अतः पर्यावरण की शुद्धि के लिए यज्ञ परमावश्यक है। पृथ्वी के अनावश्यक खनन को रोकें। प्रकृति के साथ अनावश्यक छेड़छाड़ को रोकें। धरती माँ को सुरक्षित रखने के लिए यज्ञ करें अन्यथा यह एक दिन बंजर हो जायेगी। इसके उपजाऊ भाग को नष्ट मत कर। इस पर बड़े-बड़े यज्ञ रचा। इसको प्रदूषण से बचा। इसको साज संवार कर रख। यह आपकी खूब सेवा करेगी। तू इसकी सेवा करेगा तो यह मानव की युगों-युगों तक सेवा करेगी।

योग : योग को अष्टांग योग के नाम से जाना जाता है। इसके आठ अंग हैं- यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान व समाधि। पांच यम-अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह। पांच नियम-शौच, संतोप, तप, स्वाध्याय, ईश्वर प्रणिधान।

यम नियम योग की प्रथम सीढ़ी है। इनके पालन से आपको जो लाभ होगा वह इस प्रकार है-

अहिंसा को जो अपने जीवन में प्रतिष्ठित कर लेता है, प्राणी जगत् उसके प्रति वैरभाव त्याग देता है।

सत्य को जो अपने जीवन में प्रतिष्ठित कर लेता है, उसका दुश्मन भी सबके सामने यही कहेगा कि मेरी उससे बनती

तो नहीं है, लेकिन वह आदमी सच्चा है। सत्यवादी का दुश्मन भी उसका प्रशंसक बन जाता है जबकि असत्य वक्ता की स्वयं की पत्नी भी उसे झूठा और असत्यवादी कहती है। अतः सत्य के मार्ग को भी न छोड़ें। अस्तेय के मार्ग पर चलने वाला संसार के समस्त रत्नों को प्राप्त करने का अधिकारी बन जाता है। ब्रह्मचर्य का पालन करने वाले को वीर्य लाभ होता है। वह मृत्यु को भी जीत लेता है। अपरिग्रह को आत्मसात् करने वाला व्यक्ति सभी कामनाओं को जीत लेता है।

नियमों के आचरण से ये लाभ प्राप्त होते हैं– शौच– से शरीर इंद्रियों और मन की शुद्धि होती है। सन्तोष– संतोषी सदा सुखी रहता है। तप– जिसे जो कार्य दिया गया है, उसे निष्ठापूर्वक करना तप। इसके अभ्यास से द्वंद्व सहने की शक्ति प्राप्त होती है। स्वाध्याय करने वाले को अपनी उन्नति की जानकारी होती है और अभीष्ट विषय का ज्ञान होता है। ईश्वर प्रणिधान में ईश्वर सिद्धि हेतु समाधि सिद्ध होती है।

चिरकाल तक जिस में सुखपूर्वक बैठ सके वह आसन कहलाता है। इसके निरंतर अभ्यास से द्वन्द्व नहीं सताते। प्राणायाम से प्रकाशावरण का क्षय होता है। प्राणायाम करने वाले भी बुद्धि सूक्ष्म होकर धारणाओं में मन की योग्यता हो जाती है।

चित्त को देश विशेष में चिरकाल तक लगाए रखने को ध्यान कहते हैं। समाधि से चित्त निर्विषय हो जाता है। उससे आनन्द की अनुभूति होती है और निरंतर अभ्यास से ईश्वर साक्षात्कार होता है।

बहुत से लोग ईश्वर साक्षात्कार पर निरर्थक बहस किया करते हैं। वे लोग यम–नियम की प्रथम सीढ़ी की भी अनुपालना नहीं करते। चाहते हैं ईश्वर का साक्षात्कार! ऋषि दयानन्द ने ईश्वर साक्षात्कार हेतु श्रवण, मनन, निदिध्यासन व साक्षात्कार चतुष्टय पर इस प्रकार लिखा है–

श्रवण : जब कोई विद्वान् उपदेश करें, उसे शांत= ध्यान देकर सुनना। विशेष ब्रह्मविद्या; क्योंकि यह समस्त विद्याओं में सूक्ष्म है, अतः ब्रह्मविद्या को सुनने में अत्यन्त ध्यान देना। सुनकर–

मनन : एकांत देश में बैठकर सुने हुए का विचार करना। जिस बात में शंका हो पुनः पूछना।

और ३–**निदिध्यासन :** जब सुने हुए का निःसंदेह हो जाए तब समाधिस्थ होकर उस बात को ध्यान योग से देखना, समझना कि जैसा सुना था, विचारा था वैसा है या नहीं।

चौथा **साक्षात्कार** अर्थात् जैसा पदार्थ का स्वरूप, गुण और स्वभाव हो वैसा याथातथ्य जान लेना ही श्रवण चतुष्टय कहाता है। उपर्युक्त वैदिक संस्कृति के स्तम्भों– वेद, यज्ञ और योग मार्ग पर चलकर अपने जीवन को समुन्नत करें।

ओ३म् उच्चारण के ११ शारीरिक लाभ

❑डॉ० श्वेत केतु शर्मा, बरेली

ओ३म् तीन अक्षरों से बना है–अ उ म् ।
'अ' का अर्थ है उत्पन्न होना,
'उ' का तात्पर्य है उठना, उड़ना अर्थात् विकास,
'म्' अथार्त् मौन हो जाना अर्थात् 'ब्रह्मलीन' हो जाना।
ओ३म् का उच्चारण शारीरिक लाभ भी प्रदान करता है।

(१) ओ३म् उच्चारण से थायरॉयड में आराम मिलता है। उच्चारण करने से गले में कंपन पैदा होता है, जो थायरायड ग्रंथि पर सकारात्मक प्रभाव डालता है।

(२)–अगर आपको घबराहट या अधीरता होती है तो ओ३म् के उच्चारण से उत्तम कुछ भी नहीं।

(३)–ओ३म् और तनावः–यह शरीर के विषैले तत्त्वों को दूर करता है, अर्थात् तनाव के कारण पैदा होने वाले स्रावों पर नियंत्रण करता है।

(४)–ओ३म् और रक्त का प्रवाहः–यह हृदय और रक्त के प्रवाह को संतुलित रखता है।

(५) –ओ३म् के उच्चारण से पाचन शक्ति तेज होती है।

(६)–ओ३म् लाए स्फूर्तिः–इससे शरीर में फिर से युवावस्था वाली स्फूर्ति का संचार होता है।

(७) –ओ३म् और थकानः–थकान से बचाने के लिए इससे उत्तम उपाय कुछ और नहीं।

(८) –नींद न आने की समस्या इससे कुछ ही समय में दूर हो जाती है। रात को सोते समय नींद आने तक मन में आ३म् का चिन्तन करते रहने से निश्चिंत नींद आएगी।

(९) –ओ३म् और फेफड़ेः–कुछ विशेष प्राणायाम के साथ इसे करने से फेफड़ों में मजबूती आती है।

(१०)– ओ३म् और रीढ़ की हड्डीः– ओ३म् का उच्चारण करने से कंपन पैदा होता है। इन कंपन से रीढ़ की हड्डी प्रभावित होती है और इसकी क्षमता बढ़ जाती है।

(११) –ओ३म् दूर करे तनावः–ओ३म् का उच्चारण करने से पूरा शरीर तनाव–रहित हो जाता है।

यह तो केवल उच्चारण से होने वाला लाभ है। अर्थ चिन्तन और आचरण करने से मनुष्य सब दुःखों से छूट जाता है।

योगदर्शन के अनुसार पाँच प्रकार के क्लेश

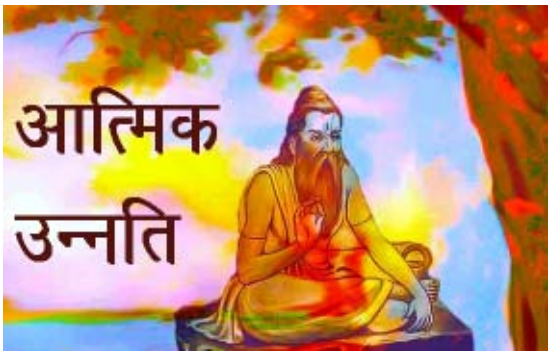

❑हरिवंश वानप्रस्थी
तपोभूमि योगसाधना केन्द्र लोहारी, पानीपत

कर्मों के संस्कारों की जड़ उक्त ५ क्लेश हैं। इन्हीं से कर्माशय बनता है।

क्लेश का अर्थ है-कष्ट देने वाला मिथ्या-ज्ञान। इस मिथ्याज्ञान या क्लेश के योगसूत्र २/३ अनुसार पांच भेद हैं- अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष, अभिनिवेश। ये क्लेश ही हैं जो मनुष्य को जन्म-मरण के चक्र में घुमाते हैं और महा दु:खदायक हैं। इनका कुछ विवरण इस प्रकार है-

(१) पहला क्लेश अविद्या

दूसरे चारों क्लेशों- राग, द्वेष, अस्मिता व अभिनिवेश को उपजाने वाली अविद्या ही है। अविद्या के भी चार भेद हैं जो योग सूत्र में (२/५) इस प्रकार बताए गए हैं-

अनित्याशुचि दु:खानात्मसु नित्य शुचिसुखात्म ख्यातिरविद्या।।

अनित्य को नित्य मानना, अपवित्र को पवित्र, दु:ख को सुख समझना, अनात्मा या अचेतन में चेतन या आत्मभाव रखना ही अविद्या है। जिस प्रकार अनित्य को नित्य समझना अविद्या है, उसी प्रकार नित्य को अनित्य मानना भी अविद्या है। ऐसे ही अपवित्र को पवित्र समझना भी अविद्या है। जैसे दु:ख को सुख मानना अविद्या है, उसी प्रकार सुख को दु:ख मानना अविद्या है। जिस प्रकार अचेतन को चेतन समझना अविद्या है उसी प्रकार चेतन को अचेतन समझना भी अविद्या है। व्याख्या इस प्रकार है-

अनित्य को नित्य मानना

यह संसार और संसार की सारी वस्तुएँ नाशवान और परिवर्तनशील हैं। हर क्षण में परिवर्तन हो रहा है। हम इन वस्तुओं को नित्य नष्ट होते देखते हैं। संसार के सभी भोग तथा शरीर भी नाशवान अथवा अनित्य हैं। इस संसार को अथवा शरीर को नित्य मानकर पाप कर्मों में प्रवृत्ति=स्वभाव हो जाए तो यह अविद्या की ही देन होगा और अनित्य वस्तु में जो राग की प्रवृत्ति बनी उसके नष्ट हो जाने पर दु:खी एवं व्याकुल होगा। इसी प्रकार नित्य और परिवर्तनशील आत्मा को यदि कोई अनित्य मान कर मरने से भयभीत रहे या समझे कि मैं नष्ट हो जाऊंगा, इसको भी अविद्या ही पुकारा जाएगा।

अपवित्र को पवित्र समझना

मनुष्य का शरीर मल-मूत्र एवं दुर्गंध से भरा हुआ है। शरीर में नौ द्वार हैं। हर द्वार से मल ही निकलता है। यह रक्त-मांस-चर्बी-मल-मूत्र-पसीना आदि वस्तुओं से भरा हुआ है। शरीर अपना हो, स्त्री का अथवा संतान का हो सबमें अपवित्र वस्तुएँ मिलेंगी। यदि इन शरीरों को पवित्र मानकर आसक्त हो जाता है, तो यह अविद्या का ही रूप होगा। मांस अथवा मरे हुए पशु-पक्षी का शरीर अपवित्र वस्तुएँ हैं। इनको पवित्र समझकर बहुत से मांसाहारी व्यक्ति खाते हैं, यह सब अविद्या के कारण है। इसके विपरीत धर्म, सत्संग, दान, यज्ञ, तप, स्तुति, प्रार्थना, उपासना आदि पवित्र कर्मों को अपवित्र समझ कर घृणा करना अथवा इन कर्मों से दूर रहना, पवित्र कर्म को अपवित्र समझना अविद्या ही है।

दु:ख को सुख मानना

संसार के सभी विषयों के भोग दु:खरूप ही हैं। इन दु:ख रूप भोग- तृष्णा, काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या आदि में सुख मिलने की आशा रखना अविद्या ही है। इसके विपरीत- जितेंद्रियता, संतोष, प्रेम, मित्रता, ईश्वर-भजन, दान, परोपकार, समाधि आदि कर्मों में सच्चा सुख है। इस सच्चे सुख को दु:ख मानकर इनसे दूर रहना अविद्या का ही स्वरूप है।

अनात्मा में आत्मबुद्धि या अचेतन में चेतन भावना

संसार में किसी न किसी रूप में जड़ वस्तुओं की पूजा होती है, जड़ वस्तुओं के साथ चेतन तुल्य व्यवहार करते हैं। कोई पत्थर की मूर्ति को पूजता है, कोई पुस्तक के आगे शीश झुकाता है या फूल चढ़ाता है। कोई सूर्य, चंद्र नदी पर्वतादि जड़ पदार्थों को पूजता है। कोई कबरों पर चादर चढ़ाते हैं। कोई स्थान विशेष पर जाने में कल्याण मानता है, कोई किसी का चित्र सामने रखकर उसकी उपासना कर रहा है- यह सारा व्यवहार अविद्या के कारण है। एक मूर्ति को क्या ज्ञान है कि कोई उसके आगे हाथ जोड़े खड़ा है,

उसकी परिक्रमा कर रहा है। इसी प्रकार सूर्य, चंद्रमा, नदी आदि को क्या ज्ञान है कि कोई उनकी स्तुति कर रहा है, उनसे वर मांग रहा है, या जय बोल रहा है। वह तो सब जड़ पदार्थ हैं। इन जड़ पदार्थों के साथ चेतन के समान व्यवहार करना =अचेतन को चेतन समझना या अनात्मा में आत्मबुद्धि रखना अविद्या ही है।

इसके विपरीत आत्मा जो असंग, चेतन, निर्विकार है, इसको अपनी अनुभूति पर न उतारना भी अविद्या ही है। जैसे शिकारी व मांसाहारी– पशु पक्षियों को अपने गोली का निशाना बनाता चला जा रहा है। उन जानवरों को जानदार ही नहीं समझना या मानो उनमें आत्मा ही नहीं है, ऐसे चेतन में अचेतन का व्यवहार करना अविद्या ही है। यह चार प्रकार की अविद्या संसार के अज्ञानी जीवों के बंधन का हेतु होकर उनको सदा नचाती रहती है। जब विद्या अथवा विवेक ज्ञान से अविद्या की निवृत्ति होती है तब मानव बंधनों से छूटता है।

(२) दूसरा क्लेश अस्मिता

योगसूत्र २/६ के अनुसार अस्मिता का वर्णन करते हुए लिखा है कि जीवात्मा और चित्त (बुद्धि) भिन्न भिन्न हैं। जीव अर्थात् द्रष्टा चेतन है और बुद्धि जड़ है, अर्थात् प्रकृति का तत्व है। जीव जो चेतन है, इसमें देखने की शक्ति है और बुद्धि एक साधन है जो दिखलाने की शक्ति है; लेकिन इन दोनों जीव (चेतना) और बुद्धि को एक मानना ही अस्मिता है। अविद्या के कारण ही इनकी एकता सी हो रही है। इसी को द्रष्टा और दृश्य का संयोग कहते हैं। इनका संयोग होते हुए भी इनका भिन्न स्वरूप है। यह विचार साधक को संप्रज्ञात समाधि द्वारा समझ में आता है, और जब तक निर्बीज या असंप्रज्ञात समाधि द्वारा अविद्या का नाश नहीं किया जाता तब तक यह अस्मिता क्लेश (मिथ्याज्ञान) अर्थात् जीवात्मा और बुद्धि के संयोग का अभाव नहीं होता। साधक को चाहिए कि साधना के अभ्यास से इस अस्मिता क्लेश (मिथ्याज्ञान) का नाश करे।

(३) तीसरा क्लेश राग

मनुष्य को सुख के पश्चात् रह जाने वाला लगाव या चिपकाव रूप भाव=राग कहलाता है। जीव को जब किसी अनुकूल पदार्थ अथवा मां–बाप, स्त्री–बच्चे व रिश्तेदार आदि में सुख का अनुभव होता है, उसमें और उसके निमित्त में लगाव या आसक्ति हो जाती है, उसी को राग कहते हैं। जब मनुष्य (साधक) को यह ज्ञान हो जाता है कि उत्पन्न होना और नष्ट होना प्रकृति का स्वभाव या धर्म है, संयोग के अंत में वियोग, बढ़ने के अंत में घटना और घटने के अंत में बढ़ना होता है, तो राग की निवृत्ति हो जाती है।

(४) चौथा क्लेश द्वेष :–

दु:ख के पश्चात् रह जाने वाला घृणा रूप भाव द्वेष है। मनुष्य को जब किसी प्रतिकूल पदार्थ या अप्रिय या खूंखार व्यक्ति आदि से दु:ख का अनुभव होता है, उसमें उसके निमित्त में घृणा या क्रोधबुद्धि का होना ही द्वेष है। इसकी निवृत्ति भी राग की निवृत्ति से ही होती है। अर्थात् वियोग में संयोग का अंत और संयोग में वियोग का अंत होता है– आदि भाव से द्वेष की निवृति होती है।

(५) पांचवाँ क्लेश : अभिनिवेश

मरणभय रूप क्लेश। यह मरण भय सभी विवेकी पुरुषों में भी मूर्ख के समान वासना के रूप में विद्यमान रहता है। कोई भी जीव– कीट पतंग से लेकर मानव तक– नहीं चाहता कि मैं मरूँ। सभी अपनी विद्यमानता चाहते हैं। मरने से डरना– यह वासना पुनर्जन्म को भी सिद्ध करती है, अर्थात् पूर्व अनुभव है। यह मरण भय जीवों के अंत:करण में इतना गहरा पैठा है कि मूर्ख तो क्या, विवेकशील पर भी इसका प्रभाव पड़ता है। इस क्लेश की निवृत्ति तभी होती है जब प्रकृति के नियम– 'बनना और नष्ट होना या जन्म लेना और मरना' को अपने अनुभव से जान लेगा।

इन पाँच क्लेशों का प्रभाव मनुष्य के जीवन पर क्या पड़ता है, इसका योगदर्शनकार ने योगदर्शन के दूसरे अध्याय के १२ से १४ सूत्रों में वर्णित किया है। कर्मों के संस्कारों की जड़ उक्त ५ क्लेश हैं। इन्हीं से कर्माशय बनता है। इनके न रहने पर कर्माशय नहीं बनता। यही क्लेशामूलक कर्माशय जैसे इस जन्म में दु:ख देते हैं, उसी प्रकार भविष्य में होने वाले जन्मों में भी दु:खदायक हैं, अत: साधक को इन्हें जड़ से काट देना चाहिए। इन कर्म संस्कारों से बार–बार अच्छी या बुरी योनि में जन्म लेना, निश्चित आयु तक जीते रहकर फिर मरण दु:ख को भोगना– इस तरह जाति, आयु और भोग रूप परिणाम होते रहते हैं। पुण्य कर्म का फल सुखदायक और पाप कर्म का दु:खदायक होता है। साधक को सुखप्रद कर्माशय और दु:खप्रद कर्माशय– दोनों प्रकार के कर्माशयों को ही साधना द्वारा दग्ध कर देना चाहिए।

गीता ४/२३ में योगेश्वर कृष्ण कहते हैं– बंधन का हेतु कर्म नहीं है, कर्म की तथा कर्मफल की आसक्ति है। आसक्ति वह रस्सी है जो कर्ता को कर्म के कर्मभोग में बांधती है। मनुष्य को राग द्वेष रहित निष्काम कर्म करने चाहिएँ, क्योंकि जो कर्मफल की प्राप्ति की आसक्ति से किए जाते हैं, वे बंधन के कारण हैं। जिसकी न कर्म में और न कर्म फलभोग में आसक्ति है, वह यज्ञार्थ कर्म अर्थात् कर्तव्य कर्म ही करता है। ऐसे मनुष्य के सभी कर्म संस्कार कर्माशय भाड़ में भुने बीज के समान दग्ध हो जाते हैं। ❐❐❐

अंग्रेजी चिकित्सा प्रणाली असफल क्यों हुई!

स्वास्थ्य क्या है? इसकी व्याख्या क्या है? स्वस्थ रहने के सुझाव; मनुष्य की दिनचर्या कैसी हो? आचार विचारों का शरीर पर प्रभाव क्या होता है? किस रोग का संबंध शरीर की किस किस क्रिया प्रणाली से है? आदि अनेकों ऐसे स्वास्थ्य व शरीर शास्त्र से संबंधित मुद्दे हैं, जिनको अनदेखा कर स्वास्थ्य की कल्पना भी नहीं की जा सकती और इस ओर उन्होंने कभी ध्यान नहीं दिया।

❑वैद्य राजेंद्र आर्य आयुर्वेद विशारद
बल्हारपुर महाराष्ट्र (७७५६९४४०९८)

जितनी घबराहट आधुनिक चिकित्सा प्रणाली के विषय में इन दिनों जनता में देखी जा रही है, इससे पूर्व कभी नहीं देखी गई थी। चिकित्सा की अन्य भी अनेक पैथियाँ यहां प्रचलित हैं। होम्योपैथी जैसी विदेशी तथा आयुर्वेद जैसे लाखों वर्ष पुरानी भारतीय चिकित्सा पद्धति हैं, किंतु इनके विषय में कभी जनता में सामूहिक अविश्वास की भावना नहीं उठी। लेकिन तुरंत असरकारक इस आधुनिक चिकित्सा पद्धति का विकास के साथ जितनी तेजी से प्रचार व प्रचार हुआ और जनता ने जिस भरोसे से इसे अपनाया वह भरोसा समय के साथ कमजोर ही होता चला गया। समय के साथ महंगी होती गई इस चिकित्सा ने देश की गरीब जनता के मध्य दूरी बढ़ा दी। साथ ही उन्हें वह समाधान देने में भी असमर्थ रही, जिसकी आस में जितना खर्च किया गया।

चिकित्सा का मामला यहीं तक सीमित रहता तब भी कुछ समझौता हो सकता था, किंतु मामला इससे कहीं आगे बढ़कर स्वस्थ होने के लिए ली जा रही औषधियों से ही जब रिएक्शन और साइड इफेक्ट जैसी प्राणों को संकट में डालने वाली घटनाएँ बढ़ने लगीं और अच्छे खासे स्वस्थ तंदुरुस्त व्यक्ति को मामूली सी बीमारी के इलाज में रिएक्शन से मौत होते या साइड इफेक्ट होकर खतरनाक रोग से ग्रस्त होता देखा जाने लगा तो जनता में खलबली मचना स्वाभाविक था।

इस चिकित्सा पद्धति की खोज शीत प्रधान देशों की है। वहाँ सदा मौसम लगभग एक सा रहता है। वातावरण में ठंड की अधिकता होती है। वहाँ जीवित रहने के लिए शरीर को गर्म रखना जरूरी है। ऐसी हालत में वहाँ पर खाद्य के रूप में जो कुछ भी उपयोग में लाया जाता है, स्वाभाविक है उसकी तासीर गर्म हो। अतः उन्होंने जब औषधियों की खोज की तब वहाँ के वातावरण को ध्यान में रखकर ही की। यही कारण है कि अंग्रेजी औषधियाँ तासीर में गर्म होती हैं।

जब हम विश्व के नक्शे में भारत का स्थान देखते हैं तब स्पष्ट पता चलता है कि यह उष्णकटिबंधीय प्रदेश में स्थित है। परिणामस्वरूप यहाँ का वातावरण स्वभावतः गर्म है। यहाँ का हवामान परिवर्तनशील है। यहाँ वर्ष में मुख्य ३ ऋतुएँ होती हैं। यहाँ बारिश में सम, शीतकाल में ठंड और ग्रीष्म काल में गर्मी होती है। यहाँ का भोजन सदा एक सा न होकर मौसम के अनुकूल सर्द गर्म तासीर का बनाकर सेवन करने से ही स्वास्थ्य की रक्षा हो सकती है। यहाँ होने वाली बीमारियाँ सर्द गर्म मौसम के प्रभाव से भिन्न भिन्न प्रकार की होती हैं, जिनका इलाज करते समय मौसम का मिजाज, रोगी की प्रकृति और रोग की स्थिति को ध्यान में रखकर उसी तासीर की औषधियों से इलाज करने में स्वास्थ्य लाभ की उम्मीद की जा सकती है।

भारत की पूर्ण भौगोलिक स्थिति को ध्यान में रखकर वैदिक काल में दिव्य दृष्टि वाले देवताओं द्वारा भारत में आयुर्वेद की खोज की गई, जो शुरू से पूर्णतः निरापद, विश्वसनीय तथा समूल रोग नाशक के गुणों से जानी जाती रही है। ऐसी सुरक्षित चिकित्सा पद्धति को छोड़कर शीत प्रधान देश की निर्मित, ऊष्ण तासीर की औषधियों का प्रचलन यहाँ पूर्ण स्वास्थ्य लाभ देने में असमर्थ रहा। जिस तरह बर्फीले प्रदेश कश्मीर का पहनावा मद्रास जैसे गर्म वातावरण में अनुकूल नहीं आ सकता, ठीक उसी तरह ठंडे मुल्क की औषधियाँ गर्म मुल्क में कभी कारगर नहीं साबित हो सकतीं।

इसकी असफलता की एक कड़ी यह भी है कि ये औषधियां ऐसे तत्वों (केमिकल) से बनाई जाती हैं जिनकी

आयु अवधि एक तो अल्प होती है दूसरी सबसे खतरनाक खामी यह है कि समय सीमा समाप्ति के बाद यह पूर्णतया भयंकरतम विष में परिवर्तित हो जाती है। इन औषधियों के इन विषैले गुणों ने साइड इफेक्ट रिएक्शन से प्रभावित लोगों के धन और प्राणों का किस तरह से हरण किया है, किस तरह अच्छे खासे स्वस्थ व्यक्ति को तिल तिल सताया और धुलाया है, इसे जनता ने खूब देखा, सुना औा भुगता है। अतः समय के साथ जनता का इससे किनारा करना स्वाभाविक ही है।

इसकी अनेक कमियों में से एक यह भी कमी है कि रोग के मूल कारणों की ओर कोई ध्यान न देना। रोग होने पर पूरी चिकित्सा व्यवस्था रोग के लक्षणों को खत्म करने में जुट जाती है। इससे होता यह है कि रोग के ऊपरी लक्षण तो औषधियों के प्रभाव से दब जाते हैं और मूल रोग का विष अंदर ही अंदर बढ़ते बढ़ते विकराल रूप धारण कर कालान्तर में किसी बड़ी बीमारी के रूप में प्रकट हो जाता है। यह भी जनता की समझ से अधिक दिन तक न छिप सका।

व्यापार के बहाने येन केन प्रकारेण धन संग्रह करने वाले अंग्रेजों ने अपनी चिकित्सा प्रणाली को भी व्यापार का स्वरूप देने में कोई कसर नहीं छोड़ी। उन्होंने रोगियों के परहेज पर कभी ध्यान नहीं दिया। न खानपान के नियम बनाए। स्वास्थ्य क्या है? इसकी व्याख्या क्या है? स्वस्थ रहने के सुझाव; मनुष्य की दिनचर्या कैसी हो? आचार विचारों का शरीर पर प्रभाव क्या होता है? किस रोग का संबंध शरीर की किस किस क्रिया प्रणाली से है? आदि अनेकों ऐसे स्वास्थ्य व शरीर शास्त्र से संबंधित मुद्दे हैं, जिनको अनदेखा कर स्वास्थ्य की कल्पना भी नहीं की जा सकती और इस ओर उन्होंने कभी ध्यान नहीं दिया।

इस चिकित्सा प्रणाली ने ऑपरेशन के क्षेत्र में पूर्ण भरोसेमंद तरक्की की है। पशुओं का उपयोग कर विकसित किया गया ऑपरेशन जहां सफलता की चरम सीमा तक पहुंच गया है, वहीं पशुओं पर प्रयोग करके प्रचलन में लाई गई औषधियाँ विश्वसनीय व निरापद नहीं रहीं। न अपने मूल नाम में ही स्थिर रह सकीं। एक समय की विख्यात एवं पूर्ण विश्वसनीय रोगनाशक टेरामायसीन और पेनिसिलिन का आज प्रचलन बंद हो चुका है। उनके स्थान पर समय समय पर आने को नई-नई औषधियाँ उनसे उत्कृष्ट, सुरक्षित एवं शीघ्र प्रभावी के नाम से आती गईं, लेकिन एक एक कर वे भी समय के प्रवाह में लुप्त होती गईं। इस चिकित्सा पद्धति की रोगनाशक औषधियों की यह स्थिति इसके शुरुआती दौर से शुरू होकर आज कई दशकों बाद भी बराबर बरकरार है।

संपूर्ण शरीर और शरीर की क्रिया प्रणाली अत्यंत जटिलतम संरचना है। संपूर्ण शरीर एक इकाई है न कि टुकड़ों में बंटा हुआ मशीनरी ढांचा। यही कारण है कि यहाँ पुर्जे बदलकर दुरुस्त करने की विधि कभी कारगर साबित नहीं हो सकी।

जैसे-जैसे ये बातें विदेशी स्वास्थ्य विशेषज्ञों के ध्यान में आती गईं, वैसे-वैसे उन्होंने अपनी खोज की दिशा को बदला और आज विश्व के लगभग सभी देशों में पूर्ण स्वास्थ्य दायिनी आयुर्वेद जैसे अति प्राचीन चिकित्सा पद्धति को अपनाने में प्रतिस्पर्धा शुरू हो चुकी है।

पानी का प्रयोग

❒डॉ० मनोहरदास अग्रावत

प्रातःकाल उठते ही प्रतिदिन बिना दंत मंजन किये केवल कुल्ला करके, सवा लीटर (लगभग चार गिलास) पानी एक साथ पीना चाहिये, जल पीने के बाद मंजन आदि कर सकते हैं। इतना पानी एक साथ नहीं पिया जा सके तो पहले पेट भर पीकर ४-५ मिनट बाद वहीं पर चलकर शेष पानी पी लें। बीमार व्यक्ति यदि एक साथ चार गिलास न पी सके तो पहले एक या दो गिलास से प्रयोग प्रारम्भ करें, धीरे-धीरे बढ़ाकर चार गिलास तक आ जायें। इसके बाद पूरा पानी जारी रखें। एक साथ इतना पानी पीने से शरीर पर कोई कुप्रभाव नहीं पड़ता है। थोड़ी देर में दो-तीन बार पेशाब अवश्य आयेगा परन्तु चार-पाँच दिन बाद वह नियमित हो जायेगा।

भोजन के दो घंटे बाद पानी पीना चाहिये बीच में या उसके पहले न पियें। भोजन के समय दो घूंट अन्न नलिका साफ करने के उद्देश्य से पियें। भोजन के बाद दो घंटे न रुक सकते हों तो एक घंटे बाद २०० मि०ली० पानी पिया जा सकता है और दो घंटे बाद आप कितना भी पानी पी सकते हैं।

खाये हुए पदार्थ का पेस्ट बनने में लगभग दो घंटे का समय लगता है। भोजन के समय गैस्ट्राईट नामक गैस भोजन को पेस्ट में रूपान्तर करती है। वह जल में घुलनशील है। भोजन के तुरन्त बाद पानी पीने से गैस जल में घुलने से अन्न का पाचन होने में कठिनाई होती है। ऐसे में कच्चा अन्न आंत में सड़न पैदा करता है जिससे अम्लपित्त होता है। अम्लपित्त ही रोगों की जड़ है। इसलिए भोजन के तुरन्त बाद पानी नहीं पीना चाहिए।

रात्रि के भोजन के बाद बिस्तर पर जाते समय पानी के अलावा कुछ भी सेवन न करें।

जानते हो!

❐कीर्ति कटारिया

✷ घोड़ा एक मिनट में औसतन १२ बार सांस लेता है। बाज, मुर्गी, कबूतर और चूहा क्रमशः २०, ५०, ६० व १३० बार सांस लेते हैं।

✷ ऊँट और बिल्ली की चलने की शैली एक जैसी होती है।

✷ लाल, नीला और हरा प्रकाश के तीन प्राथमिक रंग हैं।

✷ असम की राजधानी दिसपुर है।

✷ ब्रिटेन में यातायात बांये से चलता है।

✷ सूर्य का धरातलीय तापमान ५५३८ सेंटीग्रेड है।

✷ पृथ्वी से सूर्य की दूरी ९ करोड़ ३० लाख मील है।

✷ प्रकाश को चन्द्रमा से पृथ्वी तक आने में केवल एक सैकिंड से कुछ अधिक ही समय लगता है। जबकि सूर्य से हमारे पास तक प्रकाश आने में मात्र ८ मिनट का समय लगता है।

✷प्रकाश की गति ३० लाख किलोमीटर प्रति सैकिंड होती है।

☺☺☺हास्यम्☺☺☺

प्रस्तुति : आस्था सोनी

☺ बच्चा- 'माँ, मैंने लिखना सीख लिया।'
माँ- 'शाबाश बेटा, अच्छा बताओ तुमने क्या लिखा है?'
बच्चा- 'मुझे क्या मालूम! अभी मैंने पढ़ना कहाँ सीखा है?'

☺ बेटा- पिता से- 'पिताजी मुझे दस रुपए दो, स्कूल में लेट जाने का फाइन देना है।'
पिता जी-'नालायक, घर में क्या तुझे लेटने का समय नहीं मिलता, जो स्कूल में जाकर लेट जाता है।'

☺ मां बेटी को पढ़ाते हुए-'सभी ग्रह अपनी अपनी कक्षा में घूमते हैं।'
बेटी-'मां, तो उनकी टीचर उन्हें डांटती नहीं।'

☺ एक महिला (भिखारी से) तुम्हारे हाथ पैर सही सलामत हैं- तुम्हें भीख माँगते शर्म नहीं आती?
भिखारी-तो तुम्हारे एक रुपये के लिये हाथ पैर तुड़वा लूँ?

☺ मरीज (डाक्टर से) डा० साहब, मैं ह को ह बोलता हूँ।
डाक्टर- अरे ठीक है भाई, इसमें गलत क्या है?
मरीज- डाक्टर साहब, आप हमजे नहीं।

☺ डॉक्टर ने बेहोश मरीज को देखकर कहा- अरे यह तो मर गया है। मरीज धीरे-धीरे होश में आ रहा था। डाक्टर की बात सुनते ही बोल उठा-'अरे, पर मैं तो अभी जीवित हूँ।'
तुरन्त पास में खड़ी नर्स ने उसे डाँटते हुए कहा-चुप रहो, इतने बड़े डाक्टर झूठ बोल रहे हैं क्या?

☺ मन्त्री जी अक्सर दौरे पर रहा करते थे। एक दिन सेक्रेटरी से कुछ गलती हो गई। मन्त्री महोदय ने गुस्से में कहा- 'जरा भी अक्ल नहीं है तुम में, जब अक्ल बँट रही थी तो तुम कहाँ गए थे?'
सेक्रेटरी ने तुरन्त उत्तर दिया-जी, मैं उस समय आपके साथ दौरे पर गया हुआ था।

प्रहेलिका:

❐अनुव्रत आर्य

चार पांव, पर चल न पाऊं
बिना हिलाए हिल न पाऊं,
देती हूं सबको आराम
बताओ तो क्या है मेरा नाम?

आग लगे पानी बन जाऊं,
फिर छमछम मैं नीर बहाऊं,
आग लगे ज्यों मेरे दिल में
अंधियारों में राह दिखाऊं।

अंधा मुझको देख है सकता
सुन सकता है बहरा,
रात पड़े आ जाता हूं मैं
जाता हूं जब हो सवेरा।

रथ के तो मैं आगे रहता
पीछे रहता मोटर के,
अता पता मेरा पूछो तो
बीच में रहता मेरठ के।

तीन नेत्र, पर शंकर नहीं,
जटा है, पर योगी नहीं,
दूध है, पर गाय नहीं,
बता दो तो मूर्ख नहीं।

कुर्सी, मोमबत्ती, स्वप्न, र, नारियल,

विचार कणिका:

❐प्रतिष्ठा

❐जिससे विद्या, सभ्यता, धर्मात्मता, जितेन्द्रियतादि की बढ़ती होवे और इनसे अविद्यादि दोष छूटें, उसी को शिक्षा कहते हैं। **-स्वामी दयानन्द**

❐जब मनुष्य धार्मिक होता है, तब उसका विश्वास और मान्य शत्रु भी करते हैं और जब अधर्मी होता है, तो उसका विश्वास और मान्य मित्र भी नहीं करते।
-महर्षि दयानन्द सरस्वती

❐अहंकार का विसर्जन भारतीय शिक्षा प्रणाली का सनातन उद्देश्य था। -डॉ० शंकरदयाल शर्मा

❐विद्वानों का संग जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि है।
-स्वामी रामतीर्थ

❐सुनहरे फूलों वाली पृथिवी से तीन मनुष्य पुष्प चुन सकते हैं- १- शूरवीर २- विद्वान् तथा ३- जो सेवा करना जानता है। -महाभारत (विदुर नीति)

देशभक्त बालक हेमू कालानी

❒शिव कुमार गोयल

हेमू बचपन में ही सरदार भगत सिंह और चन्द्रशेखर आजाद की गाथा व बलिदान से प्रभावित हो गया था। वह अपनी माता से कहा करता था–'मैं भी सरदार भगत सिंह की तरह वीर की मौत मरूंगा।'

सन् १९४२ के दिन थे। ८ अगस्त को बम्बई में राष्ट्रीय महासभा ने 'भारत छोड़ो आन्दोलन' प्रस्ताव पारित किया। अंगरेज इस आंदोलन को क्रूरता से से दबा देना चाहते थे। दमन चक्र घूमने लगा।

भारतीय नेताओं की गिरफ्तारी से देश भर में क्षोभ व असंतोष व्याप्त हो गया। बच्चे से लेकर बूढ़े तक क्रुद्ध और उग्र हो उठे। हिमालय से लेकर कन्याकुमारी तक 'अंगरेजो, भारत छोडो' की हुंकार गूंज उठी।

सिंध के सक्खर नगर में भी नेताओं की गिरफ्तारी का समाचार पहुंचा। जनता का क्रोध भड़क उठा। छोटे-छोटे बच्चों ने जुलूस निकालकर 'अंगरेजो, भारत छोड़ो' के नारों से सक्खर को गुंजा दिया। क्वेटा में भी युवकों ने नेताओं की गिरफ्तारी के विरोध में जुलूस निकाले। अंगरेजों ने कराची से गोरी पलटन बुला ली। उन्होंने क्वेटा के आन्दोलन को गोलियों के बल पर कुचल डालने का निश्चय किया।

सक्खर के युवकों को समाचार मिला कि गोरे सिपाहियों से भरी एक रेलगाड़ी क्वेटा जा रही थी। उनमें कानाफूसी शुरू हो गई।

'हमारी छाती पर से होकर ये गोरे दानव क्वेटा में हमारे भाइयों के खून से होली खेलने कदापि नहीं जा सकते हैं।' स्वराज्य मंडल की बैठक में १७ वर्ष के एक किशोर ने क्रोध से तमतमाते हुए कहा। इस किशोर का नाम था–हेमू कालानी।

हेमू बचपन में ही सरदार भगत सिंह और चन्द्रशेखर आजाद की गाथा व बलिदान से प्रभावित हो गया था। वह अपनी माता से कहा करता था–'मैं भी सरदार भगत सिंह की तरह वीर की मौत मरूंगा।' बैठक में युवकों ने निश्चय किया कि रेल पटरी की फिश प्लेट खोलकर गोरों से भरी ट्रेन को गिरा दिया जाए।

रात के समय हेमू कालानी अपने दो साथियों को साथ लेकर रेलवे पटरी पर जा पहुंचा। तीनों साथी फिश प्लेटें उखाड़ने लगे। तभी रेलवे चौकीदार आ धमका। उसने हेमू को रंगे हाथों पकड़ लिया।

कमांडर रिचर्डसन की फौजी अदालत में हेमू को पेश किया गया। उसने अदालत में निडर होकर स्वीकार किया–'उस गाड़ी से क्वेटा के भारतीय देशभक्तों का खून बहाने के लिए गोरी पलटन जाने वाली थी। मैंने उसको रोकने के लिए फिश प्लेटें खोलने की कोशिश की थी।'

कमांडर रिचर्डसन ने पूछा–'इस काम में तुम्हारे साथ कौन-कौन थे?'

'मैं अकेला ही था,' हेमू ने हंसते हुए कहा।

किशोर को भरी अदालत में हंसता हुआ देखकर अंग्रेज कमांडर जल-भुनकर राख हो गया।

'अपने साथियों के नाम बता वरना तुझ पर अभी कुत्ते छुड़वा दिए जाएंगे।' कमांडर ने आंखें लाल करके धमकी दी।

'मेरे साथ केवल दो ही साथी थे।' और हेमू ने कमांडर की मेज पर रखे प्लेट खोलने के दो औजारों की ओर संकेत किया। गुस्से में भरकर अंग्रेज कमांडर ने हेमू को फांसी का दंड सुना दिया।

२१ जनवरी १९४३ का दिन फांसी के लिए निश्चित किया गया। हेमू कालानी फांसी की कोठरी में प्रतिदिन गीता का पाठ करता। 'भारत माता की जय' व 'अंग्रेजों भारत छोड़ो' के नारे लगाता। माता-पिता उससे मिलने पहुंचे। उसने उनके पैर छूकर देश पर न्यौछावर होने का आशीर्वाद मांगा। पास खड़ा जेलर बालक के साहस को देखकर दंग रह गया।

२१ जनवरी का दिन आया। हेमू कालानी हाथ में गीता लेकर फांसी की कोठी की ओर बढ़ चला। जेल के मेडीकल आफीसर ने उसका वजन लिया। उसका वजन फांसी की सजा सुनने के बाद ६ पौंड बढ़ गया था।

'क्या तुम्हारी कोई अंतिम इच्छा है?' जेलर ने हेमू से कहा।

'एक नहीं, मेरी तीन इच्छाएं हैं।' उसने कहा।

'कौन-कौन सी?' जेलर ने पूछा।

'हिन्दुस्तान आजाद हो।'

'अंग्रेजी साम्राज्य का नाश हो।'

'भारत माता की जय हो।'

हेमू कालानी फुरती के साथ फांसी के तख्ते पर चढ़कर गरज उठा–'भारत माता की जय'।

भजनावली

हरयाणा के निर्भीक लोककवि और प्रचारक : स्व० वैद्य मंगलदेव

❑**अमित आर्य**, सिवाह जिला जींद

हरियाणा के लोकवियों और आर्य भजनोपदेशकों में स्व० वैद्य मंगलदेव जी का महत्त्वपूर्ण स्थान है।

वैद्यजी का जन्म १९२० में गांव गोकलगढ़ (गोली) जिला करनाल में श्री तेलूराम जी के घर पर हुआ। उस जमाने में पढ़ाई लिखाई की तरफ लोगों का कम ही ध्यान था, तो वैद्य जी ने भी स्कूली शिक्षा नहीं प्राप्त की। वैद्य जी के तीन भाई और हैं- श्री चतरसिंह जी, श्री देईचंद जी, श्री ओमदत्त आर्य। चारों भाइयों में सबसे बड़े थे वैद्य जी। आपने अपने छोटे भाई श्री ओमदत्त जी से अक्षर ज्ञान प्राप्त किया और अपने स्वाध्याय के बल पर आयुर्वेद और कविता लेखन में अद्‌भुत योग्यता प्राप्त की।

पुस्तैनी जमीन होने के कारण वैद्य जी खेती बाड़ी भी करते थे। आज भी मंगल वैद्य जी गांव के सबसे सफल किसानों में गिने जाते हैं। बताते हैं- वैद्य जी बैलों की ऐसी जोड़ी रखते थे जो कि आसपास के गांवों में भी नहीं होती थी। उनकी फसल गांव में सबसे अलग, सबसे ज्यादा प्रभावशाली होती थी। मंगल वैद्य जी किसान का दर्द बखूबी समझते थे। यही कारण है कि वैद्य जी की रचनाओं में किसान का दर्द बखूबी उजागर हुआ है।

मंगल वैद्य जी गांव सालवन जिला करनाल में औषधालय चलाते थे। मरीजों को अंग्रेजी में भी दवा आदि लिखते थे। गांव सालवन में ही वैद्य जी ने एक कविता बनाई थी। यह वैद्यों के बारे में थी। सुनने वालों ने प्रोत्साहित किया। बस यहीं से वैद्यजी के निर्भीक कवि का जन्म हुआ।

गांव सालवन में सन् (१९५७-५८) आर्यसमाज का प्रचार सुनकर आर्यसमाज में प्रवेश हुआ। स्वामी दयानंद जी के विचारों सेऔर आर्यों के पुरुषार्थ से बहुत प्रभावित हुए। भजनोपदेश और संगीत के बारे में जानकारी ली। सबसे पहले सालवन गांव में प्रचार किया। इनकी कविता की अलग ही छाप लोगों पर पड़ी। उस जमाने में परिवार और सन्तान के प्रति समाज को आगाह किया। उन्होंने सीमित परिवार रखते हुए योग्य सन्तान बनाने का आह्‌वान करते हुए लिखा :-

पुत सुपात्र एक भतेरा चाहिएँ बीस कुजाम नहीं,
दुनिया भर की ल्यावैं बुराई, फिरैं आवारा काम नहीं।।

बहनों के लिए भी इनके बड़े अच्छे भजन हैं। एक माँ अपनी ससुराल जाती हुई बेटी को शिक्ष्खा देती है:-

मेरी लाडो चाल पड़ी ए कदे आवै नहीं हे बुराई।

ऐसे ही शराब जैसी बुराई के विरुद्ध कठोर शब्दों में चेतावनी देते हुए उन्होंने लिखा:-

बलबुद्धि और धन इज्जत ना रहती शराब के पीने से।
कई दर्जे मरना अच्छा इस बेज्जती के जीने से।

इस प्रकार आपने परिवार और समाज के उत्थान के लिए जनसामान्य की भाषा में प्रभावशाली रचनाओं का निर्माण किया। स्वयं एक किसान होने के नाते किसान का दर्द उनसे बेहतर कौन समझ सकता था। उन्होंने लिखा :-

कई कई दिन में या बिजली आवै आवै तै आकै उड़ ज्या,
तेरी खेती सुखै, घरां अंधेरा फेर बी भरणा बिल पड़ ज्या।।
कदे मीटर कदे मोटर सड़ ज्या, या मारै भाजो भाज तन्नै।।

अपने जीवन काल में मंगल वैद्य जी ने ९ किस्से (भजन इतिहास) व १६०-७० फुटकड़ भजन बनाए। ईश्वर भक्ति के भजन बनाना तो कोई इनसे सीखे :-

जर्रे जर्रे में व्यापक ना शहर नगर कोई धाम तेरा।
अगन गगन जल पृथ्वी वायु सारे अंकित नाम तेरा।

इस भजन का कोई मुकाबला नहीं है। ऐसे शब्द पिरो दिये जैसे माला बनाने वाला धागे के अन्दर मोती पिरो देता है। पाखंड पर भी करारा प्रहार करने में भी उन्हें विशेष प्रवीणता हासिल थी। हमारे गांव में (सिवाह) प्रचार के दौरान एक पोप आकर बोला- अरै मंगल वैद्य, दादा लख्मी की सुणा, के सुणावै है! वैद्य जी बड़े शील स्वभाव से बोले- भाई जी, मैं रागनी भी जाणु हूं। उसने कहा- जब तावला सुणा दे। गांव के बुजुर्ग बताते है कि तब वहीं पर यह रचना सुनाई थी:-

पढ़े लिखे पाखंड में, फिरैं श्रीमती श्रीमान, भटकते भूल मैं,
आर्यों के उपदेश बिना।

बस टेक ही सुनते ही वह चिढ़कर भाग गया।

वैद्य जी के गुरु श्री टेकचंद जी भी एक वैद्य थे। इनके शिष्यों की बात करें तो महाशय रामनिवास आर्य का नाम आर्य समाज के प्रसिद्ध व निर्भीक भजनोपदेशकों में प्रमुख है। इनकी रचनाओं को विशेष प्रसिद्धि भी रामनिवास जी की कैसेट्स से मिली। इसके अतिरिक्त रामकुमार आर्य बाघडू भी इनकी रचनाओं को विशेषज्ञता से गाते रहे हैं। तेजवीर आर्य इनके पोते हैं। वैद्य जी के परिवार में इनकी तीन बेटियां व एक बेटा है।

इनका प्रचार हरियाणा के हर जिले में होने लगा। हमारे गांव में तो वैद्य जी व चन्द्र भान आर्य जी तो खूब आते थे। प्रचार में सारा गांव इकट्ठा होता था। आज भी बड़े बुजुर्ग उस यूग को याद कर अभिभूत हो जाते हैं।

व्यक्तिगत रूप से वैद्य जी सरल, स्पष्टवादी, सत्यवादी नेकदिल, ईमानदार और परोपकारी इन्सान थे। आप अपने व्यवसाय के साथ साथ नि:स्वार्थ भाव से प्रचार कार्य भी करते रहे। स्वास्थ्य में गड़बड़ी के चलते मंगल वैद्य जी १० नवंबर सन् १९८५ को अपनी जीवन लीला समाप्त कर गए।

बड़े दु:ख के साथ लिखना पड़ रहा है कि ऐसे निर्भीक कवियों की स्मृति को बनाये रखने के लिये आज तक किसी ने नहीं सोचा। हरयाणवी साहित्य के नाम पर अधिकतर कबाड़ा छापकर जनता में परोसा जाता रहा है, ऐसे कवियों की रचनाओं को प्रोत्साहित किया जाता तो निश्चित ही स्वस्थ साहित्य को बढ़ावा मिलता और समाज में अच्छे संस्कारों का प्रचार होता।

ऐसे कवियों के लिए हरियाणा साहित्य अकादमी में विशेष दर्जा होना चाहिए। लेकिन यह अकादमी तो केवल दो तीन नामों तक सीमित है। आज तक वैद्य जी की कोई ग्रंथावली भी नहीं छप सकी है। जिस व्यक्ति ने अपना जीवन ही समाज जागृति के लिए लगा दिया आज उस को लोग कैसे भूल गए। मेरा मंगल वैद्य जी को शत शत नमन।
(श्री ओमदत्त आर्य जी द्वारा उपलब्ध कराई गई जानकारी के आधार पर) ने।

स्व० मंगल वैद्य जी की दो ठेठ हरयाणवी रचनाएँ

मातृमान गुरु पहला सबसे ज्यादा प्रभा हो सै।
बेटा बेटी चोर बणैं जो चोर चटोरी मां हो सै।।
वीर चटोरी हांडै घर घर राखे नियत बिगाने मैं।
बर्तन भांडे कपड़ा जेवर कर जा सितम उठाने मैं।
रोज रहे पंचायत बारणै शोर शराबा पान्ने मैं।
ऐसी बीर पति की इज्जत बिकवा दे दो आन्ने मैं।।
सबतै बड़ा जमाने मैं धन शर्म सच्चाई न्या हो सै।।१।।
बच्चेपन में चोरी करणा मां खुद आप सिखावै सै।
कपड़े कापी पैन और पैसे बालक ठाकै ल्यावै सै।
जूती चप्पल दांती खुरपा कोठी तलै गिरावै सै।
जो कोई घर पर पूछण आवै त भाइयाँ की सूं खावै सै।
कोई और कढेलड़ ठावै सै म्हारे का झूठा ना हो सै।।२।।
बणता बणता चोर बनै और रात्यों धक्के खाण लगै।
तोड़िया सिरसम गेहूं चणे या इंजन मोटर ठाण लगै।
झोट्टा बुग्गी बैल भैंस या घर मैं पाड़ लगाण लगै।
सौ दिन हों सैं चोर के जब एक दिन शाह का आण लगै।
जब चोरी पुलिस मनाण लगै थाणे में देक्खो क्या हो सै
कह मंगल वैद्य चटोरी मां घर की जड़ पाड़ा होया करै।
हांडी में दो पेट करै वा बीर बिगाड़ा होया करै।
ना समझावै ना धमकावै जो बाप्पू लाड़ा होया करै।
घर में खाण पै खांडा बाज्जै खूनी खाड़ा होया करै।
वो घर गितवाड़ा होया करै सब की बुरी दशा हो सै।।४।।

पूत सुपात्तर एक भतेरा चाहिएं बीस कुजाम नहीं।
दुनिया भर की ल्यावैं बुराई फिरै आवारा काम नहीं।।
बाप और बेटा सास बहू के कानून कायदे भंग होगे।
सास भी जाम्मै बहू भी जाम्मै पशुओं के से ढंग होगे।।
साल मैं होज्यां कई कई जाप्पे ठारा बीस मलंग होगे।
कइये क तड़कै आप्पा पीट्टैं दलिये ऊपर जंग होगे।।
जाम्मण वाले तंग होगे कहैं इनको ठाता राम नहीं।।१।।
घणे कुटुम्ब तै महादु:ख होग्या केन्द्र बण्या लड़ाईयां का।
किल्ले पांच हकीकी ठारा मांहे हक जमाईयां का।
धरती बांटैं न्यारे होवैं बांगड़ बाज्जे भाइयां का।
बुड्ढा दूर तमाशा देक्खै मार्‌या पड्‌या तकाइयां का।।
बाज्जै बांस कसाइयां का पर मान्नै कोई गुलाम नहीं।।२।।
बैल किसी के भैंस किसी के आया घर बंटवारे मैं।
कई एक बरतन भाण्डे लेकै जा बैठे पथवारे मैं।।
बुड्ढा घर तै खारज करकै गेर्‌या बाहर उसारे मैं।
बुढ़िया फिरै जिड़ाई मरती पैड़साल या हारे मैं।।
इस कुणबे के बारे में रह्‌या हाड्डां ऊपर चाम नहीं।।३।।
बुड्ढा बुड्ढी दोनों रोवैं के फल लाग्या पुत्तां का।
जाम्मे और पढ़ाए पाले धोये टट्टी मुत्तां का।
इससे अच्छा बांझ भली थी ना लहंडा होत्ता उत्तां का।
जीवन और जवानी खोकर रेवड़ बणाया कुत्त्यां का।।
कह मंगल वैद्य कपुत्तां का तो रहना चाहिये नाम नहीं।।४।।

पिता की प्रगतिशील परम्परा को आगे बढ़ा रहे सुबेरसिंह आर्य

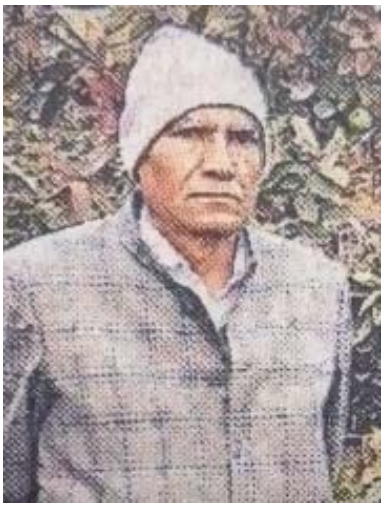

सुबेर सिंह आर्य क्षेत्र के प्रमुख आर्यसमाजी परिवार से जुड़े हैं। आप उचाना मण्डी में आर्यसमाज के अनेक पदों पर रहते हुए अपनी सेवाएँ देते रहे हैं। आर्यसमाज की अन्य गतिविधियों में भी आगे बढ़कर सहयोग करते हैं।

पालवां (उचाना) गांव के एक किसान ने अढ़ाई एकड़ में बाग लगाया था, अब यह १७ एकड़ में है और भारी मुनाफा दे रहा है। जींद के पालवां गांव निवासी स्वर्गीय सिंघराम लगभग ६ दशक पहले पानी व अन्य संसाधनों की कमी से गेहूं, चना, बाजरे की फसलों में हो रहे नुकसान से जूझ रहे थे। उन्होंने वर्ष १९५८ में बाग लगाने की सोची। उन्होंने बाग की शुरुआत दिल्ली पटियाला हाईवे पर पालवां गांव के क्षेत्र में अढाई एकड़ से की। अब बाग से चार पांच परिवारों को रोजगार मिल रहा है। स्वर्गीय सिंघ राम के सुपुत्र सुबेर सिंह श्योकन्द बताते हैं कि छह दशक पहले परम्परागत फसलों में कुछ खास बचत नहीं होती थी, क्योंकि उस समय केवल नहरी सिंचाई पर ही खेती निर्भर थी। इसी कारण उनके पिता दूरदर्शी किसान श्री सिंघराम ने बाग उस समय ढाई एकड़ में बाग लगाया। फिर बाग १० एकड़ तक फैल गया जिसमें अच्छा मुनाफा मिल रहा था। उसके बाद उन्होंने बाग को बढ़ाकर १७ एकड़ में कर लिया। इसमें १४ एकड़ में अमरुद, १ एकड़ में आंवला व २ एकड़ में बेर के पौधे लगाए हुए हैं। अब हर साल बाग को चार पांच लोगों को ठेके पर दे देते हैं। इससे जहां उनकी फसलों के मुकाबले डबल कमाई हो रही है इससे ठेकेदारों को भी अच्छी आमदनी हो रही है। अमरूद की डिमांड ज्यादा रहती है। सुबेर सिंह आर्य ने बताया कि अमरूद की पैदावार खूब हो रही है। उनके बाग के अमरुद मीठे होने के साथ-साथ साइज भी बड़ा है। वे बाग में किसी भी प्रकार का सप्रे नहीं करते। केवल देसी खाद का ही प्रयोग करते हैं। वहीं बेर के बाग में भी इसी खाद का प्रयोग किया जाता है। वे ६० सालों से बाग की खेती कर रहे हैं। वे अपने पिताजी की प्रगतिशील किसान की परम्परागत भूमिका को बखूबी निभा रहे हैं।

मेरा गांव मेरा गौरव : जुलानी गांव का जन्म दिन

बसंत पंचमी के अवसर पर मेरे गांव जुलानी वासियों ने गांव का १९९ वां जन्मदिन हर वर्ष की भाँति बड़ीधूमधाम से मनाया। इस अवसर पर गांव की खुशहाली के लिए एक हवन किया गया, जिसमें सभी जातियों के युवाओं के साथ महिलाओं, पुरुषों ओर बच्चों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया। हवन के ब्रह्मा के रूप में शांतिधर्मी के सम्पादक श्री सहदेव शास्त्री यज्ञ सम्पन्न कराया और खुशहाली व संगठन के लिए सारगर्भित उपदेश भी दिया। मेरे गांव जुलानी के दादा खेड़ा की नींव १९९ वर्ष पूर्व कुशाली नामक व्यक्ति ने रखी थी जो राजस्थान के चुरू जिले से आये थे और यह सहारण गोत्र के थे। उनके तीन बेटे थे। उन्हीं से गाँव का विस्तार हुआ है। इसके अलावा कुछ सांगवान गौत्र के भाईयो को भी यहाँ बसाया गया। अब मेरे गांव की आबादी ६२०० के लगभग है। गाँव मे हाई स्कूल, प्रायमरी स्कूल, पशु हस्पताल, प्राथमिक उपचार केन्द्र, चार आंगनबाड़ी केंद्र, हरफूल सिंह पार्क और कबीर पार्क गांव की शोभा बढ़ा रहे हैं। गाँव के जन्म दिवस (स्थापना दिवस) के अवसर पर मेरे युवा साथियों द्वारा एक सह भोज (भण्डारा) का आयोजन भी किया गया जिसमें सभी गांववासियों ने एक साथ मिलकर प्रसाद ग्रहण किया। इस दिन जुलानी वासियों की मन से इच्छा होती है कि वे अपने दादा खेड़ा पर पहुँचें। इस अवसर पर बच्चों में विशेष उत्साह होता है। इस पावन कार्य में बड़े बुजुर्गो के आशीर्वाद से प्रदीप (मोनू) राजेश कुमार, केवल सिंह सहारण, विजेन्द्र, अतुल कुमार, अजय कुमार, विनोद कुमार, दीपक कुमार आदि का विशेष सहयोग रहा। सभी जुलानी वासियों का बहुत बहुत धन्यवाद। **-मा० केवलसिंह जुलानी**

'मनु का विरोध क्यों' मुंबई में कार्यशाला संपन्न

मुंबई, गत ९ एवं १० फरवरी को आर्य समाज सांताक्रुज एवं घाटकोपर में आर्य समाज के प्रसिद्ध लेखक डॉ० विवेक आर्य (शिशु रोग विशेषज्ञ) द्वारा मनुस्मृति के विषय में कार्यशाला का आयोजन किया गया। पॉवर प्वायंट प्रैजंटेशन के रूप में यह आयोजन 'विशुद्ध मनुस्मृति लाओ, जातिवाद मिटाओ' अभियान के अंतर्गत किया गया था। मुंबई आर्यसमाज से श्री दिलीप वेलानी, श्री रमेशसिंह एवं श्री संदीप आर्य जी के सहयोग से कार्यशाला सफलता से संपन्न हुई। आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान् डॉ० देवदत्त सरोद जी का अध्यक्षीय भाषण हुआ। मनुस्मृति के विषय में बहुत भ्रांतियां हैं। डॉ० विवेक जी ने युक्तियों और प्रमाणों के साथ मनुस्मृति के सम्बन्ध में प्रचलित भ्रांतियों का निराकरण किया। (दिलीप वेलानी)

गणतंत्र दिवस पर

मुख्यातिथि देवेन्द्र आर्य ने बच्चों को दी प्रेरणा

गणतंत्र दिवस पर हसनपुर मसूरी स्थित डीएस पब्लिक स्कूल में छात्र-छात्राओं द्वारा देशभक्ति से ओतप्रोत कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। इस अवसर पर राष्ट्र वंदना मिशन के जिला संयोजक देवेंद्र आर्य एडवोकेट व वरिष्ठ अधिवक्ता जसपाल सिंह राणा ने छात्रों को उन्नति करने व महापुरुषों से प्रेरणा लेने का आह्वान किया। विद्यार्थियों ने देशभक्ति व हास परिहास से ओतप्रोत कार्यक्रम प्रस्तुत करते हुए अपनी कला का प्रदर्शन किया। कारगिल युद्ध से लेकर भगतसिंह, चंद्रशेखर आजाद पर आधारित नाटक बहुत सुंदर रहे। विभिन्न प्रांतों के लोक गीतों पर छात्रों द्वारा अद्भुत प्रदर्शन किया गया। लोक गीतों पर छात्राओं की प्रस्तुतियों को सभी ने सराहा।

इस मौके पर मुख्य अतिथि देवेंद्र आर्य एडवोकेट ने कहा कि देश की आजादी में युग प्रवर्तक महर्षि दयानंद की प्रेरणा से निकले वीरों ने अपने प्राणों की बाजी लगाकर सर्वोच्च योगदान किया। हमें विशेषकर छात्र-छात्राओं को, जो देश का भविष्य हैं, उनके जीवन से प्रेरणा लेनी चाहिए।

वरिष्ठ अधिवक्ता जसपाल सिंह राणा ने कहा कि परिश्रम सफलता की कुंजी है, इस गुरु मंत्र को अपनाकर बच्चे अपने जीवन को उन्नत बना सकते हैं। उन्होंने छात्रों को विद्या अध्ययन में आलस्य, प्रमाद न करने व परिश्रम से शिक्षा ग्रहण करने का आह्वान किया। इस मौके पर होनहार छात्रों को पुरस्कार वितरण भी किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता रणधीर सिंह द्वारा की गई तथा विद्यालय के प्रधानाचार्य/संस्थापक संत राम धामा द्वारा आगंतुकों का आभार प्रकट किया गया। कार्यक्रम का सफल संचालन अध्यापिका ऋचा शर्मा द्वारा किया गया। (विस)

ओ३म्

शांतिधर्मी परिसर नरवाना मार्ग जींद में

(निकट शिव धर्मशाला)

होली (नव शस्येष्टि) यज्ञ-महोत्सव निमन्त्रण

21 मार्च 2019 वार सायं 4 बजे से

आप सपरिवार सादर आमन्त्रित हैं।

❖यज्ञ ❖भजन ❖अध्यात्म चर्चा

निवेदक : वैदिक प्रचार समिति

सम्पर्क : 9996338552, 9896412152, 9416253826

प्रमुख समाज सेवी श्री लखमी चंद संगल नहीं रहे।

प्रमुख समाज सेवी श्री लखमी चंद संगल शामली (उ० प्र०) का निधन गत १ जनवरी को हो गया। श्री संगल के निधन का समाचार सुनते ही क्षेत्र में शोक की लहर दौड़ गई। शोक सभा में वक्ताओं ने स्वर्गीय संगल को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि समाज को उनकी कमी सदा खलेगी। प्रख्यात समाजसेवी लायंस क्लब के पूर्व मंडल अध्यक्ष एवं शामली नगर पालिका के निवर्तमान चेयरमैन श्री अरविंद संगल के पिता श्री लखमी चंद जी धार्मिक प्रवृत्ति के शांत, सौम्य स्वभाव के मृदुभाषी व्यक्तित्व के धनी थे। वे सामाजिक सरोकारों से जुड़े समाजसेवी के रूप में क्षेत्र में अपनी विशिष्ट पहचान रखते थे। दिवंगत संगल अपने पीछे भरा पूरा साधन संपन्न- पुत्र-पौत्र, नाती, बंधु, बांधुओं व इष्ट मित्रों का विशाल परिवार छोड़ गए हैं। १३ जनवरी को उनके सुपुत्र अरविंद संगल की प्रमुख शिक्षण संस्था सेंट आरसी कान्वेंट स्कूल शामली में शोक सभा का आयोजन किया गया, जिसमें क्षेत्र व आसपास के जनपदों से सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, व्यापार तथा शिक्षण संस्थाओं से जुड़े गणमान्य जनों व पारिवारिक इष्ट मित्रों ने भाग लिया। वक्ताओं ने स्वर्गीय मंगल के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए उन्हें श्रद्धा सुमन अर्पित किए। इस अवसर पर डॉ० राजकुमार अग्रवाल, अरविंद संगल, निवर्तमान चेयरमैन नगर पालिका शामली, प्रवीन्द्र संगल, श्रवण संगल, संजय संगल, नफीस अहमद, अनिमेश संगल, शाश्वत संगल, भारत संगल, आकाश संगल, हरिश्चंद्र अग्रवाल, रामकुमार अग्रवाल, कालीचरण अग्रवाल, राकेश अग्रवाल, दिनेश अग्रवाल बानी अग्रवाल, दीपक संगल, राजीव संगल, तरुण संगल सहित अनेक गणमान्य जन उपस्थित थे।

-देवेंद्र आर्य एडवोकेट आर्य भवन बागपत

मकर संक्रान्ति महापर्व पर कंबल वितरण

–देवेन्द्र आर्य एडवोकेट

बागपत, मकर संक्रान्ति महापर्व पर वरिष्ठ अधिवक्ता श्री जसपाल सिंह राणा द्वारा जिला न्यायालय के मुख्य द्वार के सामने खिचड़ी वितरण का कार्य किया गया। बाद में जिला बार सभागार मे सेवकों व निर्धन जनों को श्री जसपाल सिंह राणा जी द्वारा कम्बल वितरण किया गया। जिला बार अध्यक्ष सतेन्द्र खोखर एडवोकेट व महामंत्री आजाद धामा जी व पूर्व अध्यक्ष जयवीर सिंह तोमर जी ने श्री राणा की उदात्त भावना की मुक्त कंठ से प्रशंसा की। इस अवसर पर जिला बार एसोसिएशन बागपत के अध्यक्ष सतेन्द्र खोखर एडवोकेट व महामंत्री आजाद धामा जी व पूर्व अध्यक्ष जयवीर सिंह तोमर, विक्रम सिंह खोखर, देवेन्द्र आर्य, संजय गौड, नरेन्द्र पंवार, बली पूर्व महामंत्री, रामावतार शर्मा, योगेन्द्र शर्मा, संजय पंवार, मुनीन्द्र राणा, मुकेश शर्मा, नीरज शर्मा आदि अनेक अधिवक्तागण मौजूद रहे।

घर बैठे

संस्कृत अध्ययन करें

उच्चारण–शुद्धि, सामान्य–संस्कृत, पाणिनीय व्याकरण (अष्टाध्यायी), दर्शन–शास्त्र
आदि विषयों की कक्षाएं इन्टरनेट (स्काइप) पर।

इच्छुक सम्पर्क करें–

आचार्य सत्यवान् आर्य,

दूरभाष एवं
वट्स एप संख्या–: 9467248777

शिष्टता और शालीनता के प्रतीक वरिष्ठ अधिवक्ता

चौधरी समरजीत सिंह जी का निधन

शिष्टता और शालीनता के प्रतीक वरिष्ठ अधिक्ता चौधरी समरजीत सिंह जी का विगत २१ जनवरी को निधन हो गया। उनके निधन की सूचना पाकर अधिक्तागण एवं समाज के विभिन्न संगठनों से जुड़े प्रबुद्ध जनों में शोक की लहर दौड़ गई। चौधरी समरजीत सिंह एडवोकेट मूल रूप से ग्राम उजैडा निकट मोदीनगर जिला गाजियाबाद के निवासी थे। वर्तमान में पट्टी चौधरान बड़ौत बागपत में स्थाई रूप से रह कर जिला न्यायालय बागपत में विधि व्यवसाय कर रहे थे। ७३ वर्षीय चौधरी समरजीत सिंह एडवोकेट ४० वर्ष से अधिक समय से बागपत में वकालत करते रहे। उन्होंने अपने हंसमुख स्वभाव व मधुर व्यवहार तथा सादगी व सरलता के फलस्वरूप अपनी विशिष्ट पहचान बनाई। पिताश्री चौधरी महावीर सिंह दृढ़ आर्यसमाजी थे। तीन भाइयों व दो बहनों में सबसे बड़े मान्य बाबूजी थे। उल्लेखनीय बात यह है कि उनका नामकरण आर्यजगत् के सुविख्यात भजनोपदेशक स्वर्गीय पंडित दादा बस्तीराम जी द्वारा किया गया था। आर्यसमाज व ऋषि दयानंद की घुट्टी उन्हें जन्म से ही पिलाई गई थी। स्वर्गीय चौधरी समरजीत सिंह विगत ३ माह से बीमार थे। वे अपने पीछे अपनी अर्धांगिनी श्रीमती सोमवती व ४ विवाहित पुत्र व पौत्र पौत्रियों का भरा पूरा खुशहाल परिवार छोड़ गए हैं। दो पुत्र योगेंद्र कुमार व गजेंद्र कुमार आर्य स्थापित वरिष्ठ अधिक्ता हैं, जबकि १ पुत्र वीरेंद्र आर्य अपना निजी व्यवसाय करते हैं। सबसे छोटे पुत्र विकास आर्य सर्विस में हैं। श्रद्धेय बाबूजी के परिवार से मेरा घनिष्ट संबंध रहा है। मैंने उनको अति निकटता से देखा है। उनकी कथनी करनी समान थी। वे कर्मठ व जुझारू व्यक्तित्व थे। उन जैसे व्यक्ति विरले होते हैं। बाबू जी कई वर्ष तक आर्यसमाज बागपत के मंत्री रहे तथा सामाजिक कार्यों में बढ़ चढ़कर हिस्सा लेते थे। वकालत के क्षेत्र में अपनी साफगोई व ईमानदारी के कारण उनकी अलग छवि थी। श्रद्धेय बाबूजी की अंत्येष्टि तथा शांति यज्ञ में परिवारजनों, निकट संबंधियों के अलावा अधिवक्ता गण, समाजसेवी आर्य जनों ने शामिल हो उनके प्रति श्रद्धा भाव प्रकट करते हुए भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित की। आज श्रद्धेय चौधरी समरजीत सिंह जी हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन उनके आदर्श सदैव हमें प्रेरणा देंगे। जिला बार एसोसिएशन के अध्यक्ष सत्येंद्र खोखर, महामंत्री आजाद धामा, पूर्व अध्यक्ष जयवीर सिंह तोमर, पूर्व डीजीसी के पी सिंह, मूलचंद यादव, जसपाल सिंह राणा, देवेंद्र आर्य, रामकुमार तोमर, अजीत सिंह, सत्येंद्र दांघड़, लोकेंद्र सिंह, योगेंद्र शर्मा, संजय गौड़, राम अवतार शर्मा, नवीन ढाका, महिंद्र बंसल, नरेंद्र पवार व संजय पवार ने उनके निधन पर शोक संवेदना व्यक्त की।

देवेंद्र कुमार आर्य एडवोकेट, आर्य भवन, बागपत

दायभाग और मनु का विधान (पृष्ठ १६ का शेष)

सम्मति दी है– (अंग्रेजी निर्णय का हिंदी अनुवाद) कि 'मिताक्षरा के अनुसार दायभाग का अधिकार मृतक श्राद्ध के अधिकार के आश्रित नहीं है तथापि मिताक्षरा यह नहीं कहती कि खून के रिश्ते की निकटता देखने के लिए इस अधिकार (मृतक श्राद्ध के अधिकार) पर विचार न किया जाए।' इसी मुकदमे में आगे निर्णय देते हुए स्पष्ट लिखा है कि मिताक्षरा विधान के अनुसार यद्यपि दायभाग का अधिकार सपिण्ड संबंध अर्थात् खून की नजदीकी के ऊपर है तो भी खून की नजदीकी या गोत्रजों की निकटता देखने के लिए यही एक कसौटी है कि किसको श्राद्ध करने का अधिकार है। मिताक्षरा की प्रमाणित टीका 'वीर मित्रोदय' के लेखक मित्र मिश्र ने स्पष्ट शब्दों में इस नियम का उल्लेख कर दिया है।'

इससे इस बात का पता चलता है कि दायभाग और श्राद्ध का संबंध भाष्यकारों और टीकाकारों के मस्तिष्क की उपज है। मिताक्षरा के समय तक सपिण्ड का अर्थ 'शरीर की निकटता' या 'खून की नजदीकी' समझा जाता था। पीछे से सपिण्ड का अर्थ मृतक पिण्डदान का ले लिया गया और जब मृतश्राद्ध इतना प्रचलित हो गया कि प्रत्येक हिंदू को इसके विपरीत कल्पना करना भी कठिन हो गया तो शनैः शनैः यह दायभाग का एक अंश हो गया। हाई कोर्ट के इस फैसले में भी 'सपिण्ड' का अर्थ रक्त की एकता (कम्युनिटी ऑफ ब्लड) ही लिया गया है। अब जबकि बहुत से लोग यह मानने लगे हैं कि वैदिक धर्म के अनुसार मृतकों का श्राद्ध, तर्पण एक व्यर्थ, अनावश्यक तथा धर्म के विरुद्ध बात है और मृतकों की आत्मा की सद्गति पुत्रों के द्वारा पिण्डा पारे जाने से नहीं होती, तो इन भाष्यकारों का आश्रय लेना सर्वथा अनुचित है।

दायभाग का प्रकरण मनुस्मृति अध्याय ९ के १०३ श्लोक से आरंभ होता है और ९वें अध्याय के २२० श्लोक तक जाता है। इसके देखने, पढ़ने से प्रतीत होता है कि आरंभ में तो पिंडा पारने या पानी देने का नाम तक नहीं है। न यह दिखाया गया है कि दाभाग का आश्रय पिंडा देने के अधिकार पर है। निम्नलिखित श्लोकों में इसकी झलक इस प्रकार है–

(१) दौहित्रो-- मातामहाय च।। मनु० ९/१३२
(२) अकृता वा कृता-- पिण्डं हरेद्धनम्।। ९/१३६
(३) मातुः प्रथमतः पिण्डं--तत् पितुः पितुः।। ९/१४०
(४) त्रयाणामुदकं--नोपपद्यते।। ९/१८६
(५)अनन्तरः ---- शिष्य एव वा।। ९/१८७

इन श्लोकों के पूर्वापर श्लोकों व प्रसंग को देखने से प्रतीत होता है कि किसी ने इनको बीच में मिला दिया है। पीछे की स्मृतियों में पिंडदान तथा तर्पण का दायभाग के साथ जैसा नियमित संबंध बताया गया है वह मनुस्मृति में नहीं है। अतः प्रक्षिप्त श्लोकों को त्यागकर मनु के वास्तविक सत्य विचारों का ही प्रचार करना चाहिए। (समाप्त)

आर्य सिद्धान्तों के (पृष्ठ ११ का शेष)

न होता तो स्वतन्त्रता से व्याख्यान देना, वेदमत प्रचारक पुस्तकें लिखना सम्भव न होता और आज तक मेरा शरीर भी बचना कठिन था। इसलिए इन सभी महानुभावों को हम धन्यवाद देते हैं।'

सत्यार्थप्रकाश के सम्बन्ध में प्रसिद्ध देशभक्त लाला हरदयाल एम० ए० के विचार– 'इस महान ग्रन्थ के अध्ययन से मेरी विचारधारा बदल गई है। सोई हुई जाति के स्वाभिमान को जाग्रत करने वाला यह ग्रन्थ अद्वितीय है।'

वीर सावरकर की सत्यार्थप्रकाश पर टिप्पणी– 'हिन्दू जाति की ठण्डी रगों में गर्म खून का संचार करने वाला यह ग्रन्थ अमर रहे। सत्यार्थप्रकाश की विद्यमानता में कोई विधर्मी अपने मजहब की शेखी नहीं मार सकता।'

प्रसिद्ध कवि सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला ने कहा था– हमारा सर्वाधिक उपकार महर्षि दयानन्द ने किया है।

महान कहानीकार उपन्यास सम्राट् मुन्शी प्रेमचन्द की एक कहानी है– 'आपका चित्र'। कहानी के नायक ने अपने कमरे में स्वामी दयानन्द का एक चित्र लटका रखा है। वह बता रहा है कि यह चित्र उसने क्यों लटका रखा है। 'मैं उसे केवल इस कारण से अपने कमरे में लटकाए हुए हूँ कि स्वामीजी के जीवन का उच्च और पवित्र आचरण सदा मेरी आँखों के सामने रहे। जिस घड़ी सांसारिक लोगों के व्यवहार से मेरा मन ऊब जाए, जिस समय प्रलोभनों के कारण पग डगमगाएं अथवा प्रतिशोध की भावना मेरे मन में लहरें लेने लगे अथवा जीवन की कठिन राहें मेरे साहस व शौर्य की अग्नि को मन्द करने लगें, उस विकट बेला में उस पवित्र मोहिनी मूर्त के दर्शनों से आकुल व्याकुल हृदय को शान्ति हो, दृढ़ता, धीरज बने रहें, क्षमा व सहनशीलता के मार्ग पर पग चलते चलें, तथा मैं अनुभव के आधार पर कह सकता हूँ कि इस चित्र से मुझे लाभ पहुँचा है और एक बार नहीं, कई बार।

इस प्रकार हम देखते हैं कि स्वामी दयानन्द मन-वचन-कर्म से अद्वितीय महापुरुष थे। उन्होंने अकल्पनीय पुरुषार्थ के बल पर विलुप्त प्रायः आर्यमान्यताओं की पुनर्स्थापना की।

बिन्दु बिन्दु विचार संकलन

❒भलेराम आर्य, सांघी वाले 9416972879

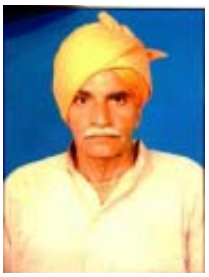

●जो व्यक्ति यह कहे कि मैं सच बोलता हूँ तो समझो वह झूठ भी बोलता है, क्योंकि सच कहने वाले को 'मैं सच कहता हूँ' यह कहने की आवश्यकता ही नहीं है।

●भोजन वही सार्थक जो शरीर के काम आए; प्रवचन वही सार्थक जो जीवन में ढल जाए।

●सुख प्राप्ति के लिए दो बातें आवश्यक हैं– किसी दूसरे की मेहनत का श्रेय खुद न ले तथा अपनी गलती को दूसरे के सिर कभी न थोंपे।

●प्राय: लोग उन लोगों से नाराज हो जाते हैं जो उनके दोष बताते हैं, जबकि उन्हें नाराज होना चाहिए उन दोषों से जो कि उन्हें बताए जाते हैं।

●जिन्दगी का अर्थ केवल मौत तक जीना नहीं है अपितु जिन्दगी का अर्थ तो मौत के बाद जीना ही है।

●समय सब द्रव्यों से अधिक मूल्यवान् है।

●जिस व्यक्ति का नजरिया निराशाजनक है वह कभी सुखी नहीं हो सकता।

●बिखरा हुआ मन व्यक्ति की अथाह शक्ति को खण्ड खण्ड कर देता है और एक बिन्दु पर टिका हुआ एकाग्र मन व्यक्ति को अथाह शक्ति से भर देता है।

●इन्द्रियों को वश में करना बुद्धिमान का काम है और इन्द्रियों के वश में होना मूर्ख का।

●जीवन में घटने वाली छोटी छोटी घटनाएँ ही हमारी सच्ची गुरु होती हैं, इनसे हमें शिक्षा लेनी चाहिए।

●मनुष्य जब अपनी बड़ाई पर अभिमान करता है तो पशु अपने अपने गुणों का वर्णन करके उसे हरा देते हैं।

शांतिधर्मी के पाठकों से निवेदन

सम्मान्य पाठकगण, यह आपके आत्मीय सहयोग से ही सम्भव हुआ है कि शांतिधर्मी नियमित प्रकाशन के २० वर्ष पूर्ण कर रहा है। हम पूरी सावधानी से हर मास सभी पते जाँच कर पत्रिका डाक में प्रेषित करते हैं। कुछ पाठकों को पत्रिका नहीं मिल पाती है। इस समस्या से हम परिचित हैं। हम डाक विभाग को सुधार नहीं सकते हैं। तथापि आपसे निवेदन करते हैं कि–

१ एक स्थान पर १० या अधिक सदस्य होने पर किसी एक सदस्य के पास पैकेट रजिस्टर्ड डाक से भेजते हैं। इसका रजिस्टरी खर्च हम वहन करते हैं। रजिस्टरी और पैकिंग सहित यह लगभग ३००/– होता है। एक सदस्य का रजिस्टरी खर्च वहन करना हमारे लिये संभव नहीं है। यदि आपको अपनी प्रति साधारण डाक से नहीं मिल रही है और आप अपनी एक प्रति रजिस्टरी से मंगाना चाहते हैं तो अपने सदस्यता शुल्क में एक वर्ष के लिए अतिरिक्त ३००/– जोड़कर भेजें। हम चाहेंगे कि आप दस वर्षीय सदस्यता शुल्क भेजने की बजाय अपने आसपास के कम से कम दस सदस्यों का वार्षिक शुल्क भेजें। आपको एक वर्ष तक हर मास १० प्रतियाँ रजिस्टर्ड डाक से प्राप्त होंगीं। यह सहयोग कुछ पाठक कर भी रहे हैं।

२ आप अपनी प्रति ई मेल से भी पीडीएफ में मंगा सकते हैं। उसके लिए कोई अतिरिक्त शुल्क देय नहीं है।

३ २००४ से पूर्व के आजीवन सदस्यों को हम निरन्तर पत्रिका भेज रहे हैं। परन्तु उनसे हमारा प्राय: कोई सम्पर्क नहीं हो पा रहा है। उन्हें पत्रिका मिल रही है या नहीं, या उनके लिये इसकी कोई उपयोगिता भी है या नहीं? इसलिये उन मान्य पाठकों से प्रार्थना है कि अपने पते की पुष्टि हमारे ईमेल, व्हाट्स एप पर या फोन द्वारा शीघ्र करने का कष्ट करें। पते की पुष्टि न होने पर हम उन्हें २१ वें वर्ष से पत्रिका नहीं भेज पायेंगे।

४ अभी वार्षिक शुल्क १२०/– तथा १०००/– दस वर्ष का शुल्क है। इसमें वृद्धि संभव है।

आशा है आपका स्नेह बना रहेगा, और हम इस कार्य को और अधिक उत्साह से कर पायेंगे।

भवदीय **सहदेव समर्पित** सम्पादक शांतिधर्मी
पोस्ट बॉक्स नम्बर 19, मुख्य डाकघर जींद–126102

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक सहदेव द्वारा प्रियंका प्रिंटर्स, जींद के लिए आचार्य प्रिंटिंग प्रैस रोहतक से छपवाकर, कार्यालय शान्तिधर्मी ७५६/३, आदर्श नगर, सुभाष चौक (पटियाला चौक), जीन्द-१२६१०२ (हरि०) से प्रकाशित। सम्पादक : सहदेव

आर्यसमाज घाटकोपर एवं आर्यसमाज सान्ताक्रूज (मुम्बई) में मनुस्मृति पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। डॉ० विवेक आर्य ने मनुस्मृति के संबंध में पावर प्वांट प्रजेंटेशन से शंकाओं का समाधान किया।

आर्यसमाज बीकानेर गंगायचा अहीर में महाशय हीरालाल जी की ११३ वीं जयन्ती मनाई गई।

शांतिधर्मी परिसर जींद में पूर्णिमा यज्ञ व सत्संग का आयोजन। मुख्य यजमान के रूप में प्रिंसिपल राजकुमार वर्मा जी उपस्थित हुए।

टांटिया विश्वविद्यालय एवं
गुगनराम एजुकेशनल एण्ड सोशल वैलफेयर सोसायटी (रजि.)

द्वारा

24 मार्च 2019 (रविवार) को
एक दिवसीय (MULTI DISCIPLINARY) अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी

का आयोजन आर्य समाज घंटाघर, भिवानी (हरियाणा)
में किया जा रहा है। जिसमें आप सादर आमंत्रित हैं।

मुख्य विषय - इक्कीसवीं सदी : नव विमर्श

उप विषय

1. किन्नर विमर्श
2. खेल विमर्श
3. ग्रामीण विमर्श
4. परिवार विमर्श
5. आदिवासी विमर्श
6. वृद्ध विमर्श
7. दिव्यांग विमर्श
8. किसान विमर्श
9. मिडिया विमर्श
10. प्रवासी विमर्श
11. समाज विमर्श
12. पर्यावरण विमर्श
13. सांख्यिकी विमर्श
14. विधि विमर्श
15. भ्रष्टाचार विमर्श
16. आरक्षण विमर्श
17. शोध विमर्श
18. पुरुष विमर्श
19. वेद विमर्श
20. अन्य विमर्श

प्रतिभागी सम्बन्धित विषयों पर अपने शोध पत्र कम्प्यूटर द्वारा फॉन्ट कृति देव 010/यूनिकोर्ड व अंग्रेजी फॉन्ट टाईम्स रोमन में टाईप करवाकर **M.S. Word / Page Maker** में भेजे। पजीकरण शुल्क प्राध्यापक 501 रु., शोधार्थी 251 रु. आलेखों का प्रकाशन ISBN पुस्तक में साहित्य संचय प्रकाशन दिल्ली द्वारा किया जायेगा जो आपको खरीद करनी होगी, आप अपने आलेख 28 फरवरी 2019 तक **grngobwn@gmail.com** पर भेजें।

संरक्षक :
डॉ. राजेन्द्र गोदारा
अधिष्ठाता शिक्षा, टांटिया विश्वविद्यालय श्रीगंगानगर (राजस्थान)
डॉ. संजय एल. मादार
अध्यक्ष, उच्च शिक्षा एवं शोध संस्थान, धारवाड़ (कर्नाटक)

संयोजक:
डॉ. रामफल आर्य
प्रधान सम्पादक, बोहल शोध मंजूषा

संयोजिका:
डॉ. सुशीला
हिन्दी विभाग, चौ. बंसीलाल विश्वविद्यालय, भिवानी

सचिव :
डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट
202, पुराना हाउसिंग बोर्ड, भिवानी-127021 हरि.
मो. 9466532152, 8708822674
मनोज कुमार
साहित्य संचय प्रकाशन, दिल्ली-काठमाण्डु
मो. 9871418244

R.N.I. No. 70866/99 शान्तिधर्मी हिन्दी मासिक (फरवरी, २०१६) P.R. No. : PKL 150-A/2017-19

॥ ओ३म् ॥

स्वामी दयानंद सरस्वती
(आर्य समाज के संस्थापक)

शिवालिक गुरुकुल

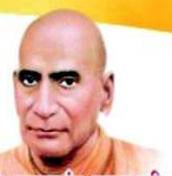

स्वामी श्रद्धानंद सरस्वती
(गुरुकुल शिक्षा के विस्तारक)

भारतीय संस्कृति के साथ आपके बच्चे का उज्ज्वल भविष्य

सी.बी.एस.ई. पाठ्यक्रम (केवल लड़कों के लिए)

प्रवेश सूचना

प्रवेश प्रारम्भ
कक्षा चौथी से नौवीं तक
2019-20

"शिक्षा, सुरक्षा, संस्कार और सेवा"
इन चार उद्देश्यों के साथ गुरुकुल का संचालन किया जा रहा है।

विद्यार्थी जीवन ज्ञान एवं शक्ति के संचय का काल है। यथार्थ ज्ञान के बिना किसी भी प्रकार के सुख की प्राप्ति कल्पना मात्र है। प्राचीन काल में बालक के चहुँमुखी विकास के लिए माता-पिता श्रेष्ठ गुरुओं के कुल (गुरुकुल) में अध्ययन के लिए प्रविष्ट कराते थे, जहाँ सम्पूर्ण विद्याओं का पठन-पाठन एक ही स्थान पर उपलब्ध होने से विद्यार्थी का सर्वांगीण विकास संभव हो पाता था। कुछ शिथिलताओं के चलते कालान्तर में इसका स्वरूप परिवर्तित होता गया। वर्तमान काल में भी यदि हम अपने बच्चों का एक ही स्थल पर सम्पूर्ण विकास करना चाहते हैं, तो वह राष्ट्रीय गुरुकुल शिक्षा प्रणाली से ही संभव है। इस चिन्तन को साकार रूप देने के लिए शिवालिक शिक्षण संस्थान समूह ने ऋषियों की इस प्राचीन प्रणाली को आधुनिक शिक्षा के साथ सुरक्षा, संस्कार और सेवा इन चार उद्देश्यों को सुनियोजित कर राष्ट्र व छात्रों की सर्वोन्नति के लिए शिवालिक गुरुकुल (Shivalik Gurukul) का संचालन किया जा रहा है।

प्राचार्य : शिवालिक गुरुकुल

FEATURES
- Ultra Modern Fully Airconditioned Hostel with Stern supervision by wardens & CCTV (24x7)
- Horse Riding, Skating & Gun Shooting • Separate Coach for Games • Campus in 16 Acres
- Special Focus on Moral Values • Experienced & Dedicated Staff • Lush Green Play Ground.

Vill. Aliyaspur, P.O. Sarawan, Mullana, Ambala (Haryana) • **E-mail :** shivalikgurukul.ambala@gmail.com
Admission Helpline : 9671228002, 8813061212, 8901140225 • **Website :** www.shivalikgurukul.com